सप्ताहिक

बदलते अल्फाज़

चंडीगढ़, रविवार 02 अगस्त से
08 अगस्त 2026

खबरों का नया स्वरूप

पेज 8

'प्रीति मेरे करियर का सबसे यादगार किरदार..'

वर्ष : 05, अंक : 21, मूल्य : 5.00 रुपए पेज: 08 | www.badlteyalfaaj.com | E-mail:badaltealfaaz@gmail.com

For Advertising
Prabhat kumar +918847461287
E-mail:badaltealfaaz@gmail.com
www.badltealfaaj.com
बदलते अलफाज़ समाचार पत्र में सामचार सम्बंधित इस नबंर पर करें सम्पर्क
Office Landline Number
01725098269
www.badltealfaaj.com

पीओके में मानवाधिकार संकट?: चार दिनों में 50 से ज्यादा लोगों की मौतें

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में अशांति लगातार बढ़ रही है। पिछले चार दिनों में पाकिस्तानी सेना की कब्जे वाले क्षेत्र में की गई क्रूर कार्रवाई में 50 से अधिक लोग मारे गए हैं। वहीं, सैकड़ों घायल हुए हैं।

उमर नजीर कश्मीरी ने क्या कहा?

शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर संयुक्त अवामी एक्शन कमेटी (JAAC) के सदस्य सरदार उमर नजीर कश्मीरी ने कहा, "पिछले चार दिनों में, सुरक्षा बलों ने क्रूर आतंकवाद के जरिए हमारे 50 से अधिक लोगों को मार डाला है, और सैकड़ों घायल हैं.."
एक अलग पोस्ट में, जेएएसी ने कहा कि पीओके के मुजफ्फरबाद क्षेत्र में देर रात तक विरोध प्रदर्शन जारी रहे। लोग सड़कों पर डटे रहे और अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा और स्थानीय अधिकारियों द्वारा की गई प्रतिबद्धताओं के कार्यान्वयन की मांग करते रहे।

एचआरएफ ने हमले की निंदी की

इस बीच, अमेरिका स्थित मानवाधिकार संस्था ह्यूमन राइट्स फाउंडेशन (एचआरएफ) ने शनिवार को पीओके में निहत्थे शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पाकिस्तानी सेना द्वारा कथित तौर पर बल प्रयोग की कड़ी निंदा की, जिसमें क्षेत्र में 50 से अधिक लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हुए।

एचआरएफ ने क्या कहा?

संगठन ने पाकिस्तानी अधिकारियों से हिंसक कार्रवाई समाप्त करने, मोबाइल संचार बहाल करने और बल के सभी गैरकानूनी उपयोग के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने का आह्वान किया। स्थानीय नागरिक समाज समूह का हवाला देते हुए एचआरएफ ने कहा कि पाकिस्तानी सुरक्षा बलों ने पीओके में प्रदर्शनों के दौरान हजारों शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं।
इसमें कहा गया है, 'विरोध प्रदर्शन के आयोजकों ने दावा किया कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने सबूतों को छिपाने की कोशिश की है। पाकिस्तान ने अस्पतालों से शवों को हटा दिया और कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया।'

संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों के साथ बैठक हुई

इसके अलावा, यूनाइटेड कश्मीर पीपुल्स नेशनल पार्टी (यूकेपीएनपी) के अध्यक्ष सरदार शौकत अली कश्मीरी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में कई बैठकें कीं, ताकि संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों को पीओके में पाकिस्तानी सेना द्वारा की गई क्रूरताओं के बारे में जानकारी दी जा सके।

कुलगाम में आतंकियों ने की दो प्रवासी मजदूरों की गोली मारकर हत्या

एजेंसी, श्रीनगर।

दक्षिणी कश्मीर के कुलगाम ज़िले में शुक्रवार शाम आतंकवादियों की ओर से की गई गोलीबारी में दो प्रवासी मजदूरों की मौत हो गई।

दोनों मजदूर छत्तीसगढ़ के रहने वाले थे और केलम इलाके में एक ईंट-भट्ठे पर काम करते थे। कुलगाम के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि मृतकों की पहचान दीपक रात्रे और भूपिंदर के रूप में हुई है।

अधिकारी के अनुसार दीपक की मौत घटनास्थल पर ही हो गई जबकि गंभीर रूप से घायल भूपिंदर को पहले अनंतनाग के सरकारी मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। वहां से उन्हें श्रीनगर स्थित शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज रेफर किया गया, जहां शनिवार सुबह इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

घटना के बाद हमलावर अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गए। सुरक्षा बलों ने पूरे इलाके की घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू कर दिया है।

हालांकि, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने अब तक इस मामले में कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है और न ही किसी आतंकी संगठन ने हमले की ज़िम्मेदारी ली है।

गोलीबारी की घटना के बाद जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर जानकारी दी कि उन्होंने जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) नलिन प्रभात और अन्य वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारियों से बातचीत की है।

उपराज्यपाल ने अपने पोस्ट में कहा, मैंने हमारे सुरक्षा बलों को अपने ऑपरेशन तेज करने और आतंकवादियों को खत्म करने का निर्देश दिया है।

सूत्रों ने बताया कि इस वारदात को अंजाम आतंकी मोहम्मद लतीफ ने दिया है। इसी ने 22 जुलाई को अनंतनाग में हेड कॉन्स्टेबल आशिक हुसैन कुरैशी की लाल चौक इलाके में दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी थी।

यूपी-बिहार समेत 6 राज्यों से आते हैं सबसे ज्यादा मजदूर

करीब 3-5 लाख प्रवासी मजदूर हर साल मौसमी या अस्थायी काम के लिए जम्मू-कश्मीर पहुंचते हैं। इनमें सबसे ज्यादा मजदूर बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और छत्तीसगढ़ से आते हैं। ये कंस्ट्रक्शन, ईंट-भट्ठों, सड़क परियोजनाओं, बागवानी, कृषि, होटल-पर्यटन और छोटे उद्योगों में काम करते हैं।

लतीफ पर शक मोटरसाइकिल पर पहुंचा था

रिपोर्ट्स के मुताबिक, लतीफ और उसका साथी मोटरसाइकिल पर प्रवासी मजदूरों के पास पहुंचा था। इन्होंने पहचान पत्र चेक किए और बहुत करीब से गोलीबारी की।
स्थानीय लोगों के मुताबिक, उन्होंने 10-12 राउंड फायर की आवाज सुनी।
एजेंसियों के अनुसार, लतीफ ने यह हमला इसलिए किया, ताकि वह यह संदेश दे सके कि उसका मॉड्यूल अब भी एक्टिव है और आतंकी हमले करने में सक्षम है।
खुफिया सूत्रों का मानना है कि इस गोलीबारी की साजिश सीमा पार बैठे लश्कर के हैंडलर्स ने रची। शक मुख्य रूप से सज्जाद जट्ट / सैफुल्ला पर है, जो पाकिस्तान में रहने वाला जैश का सीनियर हैंडलर है।
बीते दो-तीन साल में कश्मीर के ईंट-भट्ठों पर ऐसे ही आतंकी हमले हुए थे, जिसके बाद पुलिस ने यहां उउळश कैमरे लगाने का निर्देश दिया था। इस ईंट भट्ठे पर भी सीसीटीवी कैमरे लगे थे, जिसके फुटेज की पड़ताल की जा रही है। इस पूरे इलाके में 20 से ज्यादा ईंट भट्ठे हैं।

मुस्लिम नहीं कर सकेंगे एक से ज्यादा शादी?

एजेंसी, नई दिल्ली।

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को मुस्लिम समुदाय में बहुविवाह की प्रथा को असंवैधानिक घोषित करने की मांग वाली याचिका पर केंद्र सरकार से जवाब तलब किया है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहन की पीठ ने महिला अधिकार कार्यकर्ता जकिया सोमन, नूरजहां सफिया नियाज और अन्य की याचिका पर केंद्र को नोटिस जारी किया। अदालत ने इस याचिका को पहले से लंबित समान मामलों के साथ जोड़ दिया है। याचिका में कहा गया है कि यह प्रथा संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 21 का उल्लंघन करती है।

क्या है याचिका की मुख्य मांग?

याचिका में मांग की गई है कि भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 82, जो द्विविवाह (बिगैमी) को दंडनीय अपराध मानती है, उसे सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू किया जाए। इसके लिए मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत मिलने वाली छूट को समाप्त करने की मांग की गई है। याचिकाकर्ताओं ने केंद्र सरकार से कानून बनाकर बहुविवाह की प्रथा को समाप्त करने और इसे शुरूआत से ही अमान्य (वॉइड एब इनिशियो) घोषित करने की मांग की है। उनका कहना है कि कानून सभी धर्मों के नागरिकों के लिए समान होना चाहिए।

मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों को लेकर क्या मांगें उठाई गईं?

याचिका में मुस्लिम महिलाओं के कानूनी अधिकार और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई अन्य निर्देश भी मांगे गए हैं। इसमें सभी मुस्लिम विवाह और तलाक का राज्य सरकारों के पास अनिवार्य पंजीकरण कराने की मांग शामिल है, ताकि गुप्त रूप से दूसरी शादी करने की घटनाओं पर रोक लग सके। इसके अलावा पहली पत्नी और उसके बच्चों को वैवाहिक घर में तत्काल अधिकार देने तथा बहुविवाह से जुड़े मामलों में भरण-पोषण के लिए फास्ट ट्रैक व्यवस्था बनाने की भी मांग की गई है। याचिका अनुच्छेद 32 के तहत जनहित में दाखिल की गई है, जिसका उद्देश्य मुस्लिम महिलाओं के मौलिक अधिकारों की रक्षा करना बताया गया है।

राहुल बोले- परिसीमन भाजपा की साजिश है, इसका समर्थन करने वाले तमिलनाडु के साथ कर रहे धोखा

एजेंसी, नई दिल्ली।

लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने तमिलनाडु के महाबलीपुरम में मीडिया से बात करते हुए केंद्र सरकार पर करारा हमला बोला है। उन्होंने कहा, 'भाजपा परिसीमन करने की कोशिश कर रही है। परिसीमन का मकसद लोगों को उनके अधिकारों से वंचित करना और तमिलनाडु के लोगों की राजनीतिक ताकत छीनना है। यह भाजपा की साजिश है... जो कोई भी परिसीमन का समर्थन करता है, वह तमिलनाडु और उसके भविष्य के साथ धोखा कर रहा है, और आरएएसएस व भाजपा को तमिलनाडु के लोगों और उनके भविष्य पर हमला करने का मौका दे रहा है।

तमिल व्यक्ति न करें परिसीमन का समर्थनः राहुल

राहुल गांधी ने आगे कहा कि ऐसा व्यक्ति 21वीं सदी का 'एट्टप्पन' है। किसी भी तमिल व्यक्ति को परिसीमन का समर्थन नहीं करना चाहिए। हर तमिल व्यक्ति को परिसीमन का विरोध करना चाहिए। हर तमिल पार्टी और हर राष्ट्रीय पार्टी को सदन में परिसीमन को हराना चाहिए'।

कौन था एट्टप्पन? जिसका राहुल ने किया जिक्र

एट्टप्पन तमिल इतिहास का एक विवादास्पद नाम है। एट्टप्पन को आमतौर पर वीर स्वतंत्रता सेनानी वीरपांडिया कट्टबोम्मन के साथ विश्वासघात करने वाले व्यक्ति के तौर पर जाना जाता है। 18वीं शताब्दी के अंत में अंग्रेजों और स्थानीय पालयक्कर शासकों के बीच संघर्ष चल रहा था। इतिहास के अनुसार, एट्टप्पन ने कट्टबोम्मन की गतिविधियों की जानकारी अंग्रेजों को दी, जिससे उन्हें गिरफ्तार करने में मदद मिली। 1799 में कट्टबोम्मन को अंग्रेजों ने फांसी दे दी। इसी कारण तमिल संस्कृति में 'एट्टप्पन' नाम विश्वासघात का पर्याय बन गया है। हालांकि इस विषय पर इतिहासकारों के बीच अलग-अलग मत मौजूद हैं।

'देश चलाना है तो कानून भी बनेंगे'

संसद में प्रदर्शन पर सख्त रिजिजू; बोले- 'पूरा समय दिया, अब शिकायत क्यों?'

एजेंसी, नई दिल्ली।

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने विपक्ष के उन आरोपों को खारिज किया है जिसमें विपक्ष ने आरोप लगाया था कि सरकार ने बिना चर्चा किए नए बिलों को संसद से पास करा दिया। विपक्ष के इन आरोपों का जवाब देते हुए रिजिजू ने कहा कि ऐसे आरोप कोई नई बात नहीं हैं। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल लगातार इस तरह के आरोप लगाते रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता सूचीबद्ध विधेयकों को पारित कराना और संसद के तय कामकाज को पूरा करना है। आखिर देश को आगे बढ़ाने के लिए कानून बनाने पड़ते हैं।

संसद को बजट और अन्य महत्वपूर्ण मामलों को भी मंजूरी देनी होती है। अगर लगातार हंगामे के कारण सरकार जरूरी विधेयक भी पारित नहीं करा पाए, तो फिर संसद चलाने का उद्देश्य ही क्या रह जाएगा? उन्होंने कहा कि सरकार विधेयक पारित कराती रहेगी। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि विपक्ष बाद में यह आरोप न लगाए कि बिना चर्चा के बिल पारित किए गए, क्योंकि चर्चा के लिए पर्याप्त समय दिया गया है।

क्या संसद वेशभूषा बदलने की जगह है?

सांसद पप्पू यादव के विरोध-प्रदर्शन के तरीके पर किरेन रिजिजू ने कहा कि लोकसभा स्पीकर पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि संसद वेशभूषा बदलकर प्रदर्शन करने का मंच नहीं है। उन्होंने कहा कि सांसदों को अपनी गरिमा और गंभीरता बनाए रखनी चाहिए। अगर कोई सांसद है, तो उसका व्यवहार भी उसी गरिमा के अनुरूप होना चाहिए। उन्होंने कहा कि संसद नाटकबाजी की जगह नहीं है और स्पीकर इस बारे में पहले ही अपना रुख स्पष्ट कर चुके हैं, इसलिए उन्हें इसे दोहराने की जरूरत नहीं है।

संसद में प्रदर्शन मामलाः वाराणसी में राहुल गांधी, पप्पू यादव और अवधेश प्रसाद पर मुकदमा दर्ज

एजेंसी, वाराणसी।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के आरोप में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद और सांसद पप्पू यादव के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। पातालपुरी मठ, नरहरिपुरा के पीठाधीश्वर जगद्गुरु बालक देवाचार्य ने संसद परिसर में हुए सियासी नाटक को लेकर कोतवाली थाने में तहरीर दी थी और इसमें शामिल सांसद पप्पू यादव के खिलाफ एफआईआर दर्ज की मांग की थी। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि संसद परिसर में 31 जुलाई 2026 को हुए सियासी प्रदर्शन में हिंदू संत परंपरा, भगवान श्रीराम मंदिर तथा श्रद्धालुओं द्वारा दिए गए पवित्र दान का मजाक बनाया गया। आरोप लगाया कि कांग्रेस और सपा सांसदों ने नाटकीय प्रदर्शन कर देश के करोड़ों हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई है।

संतों की तरफ से दी गई शिकायत में राहुल गांधी, राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव और फैजाबाद से सांसद अवधेश प्रसाद का नाम लिया गया। इन पर आरोप है कि प्रदर्शन के दौरान भगवा वस्त्र पहनकर और हिंदू संतों के स्वरूप का राजनीतिक उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया गया। शिकायत में यह भी कहा गया कि इस नाटकीय प्रदर्शन से हिंदू आस्था, संत परंपरा और धार्मिक प्रतीकों का सार्वजिनक मजाक बनाया गया है और इससे समाज में धार्मिक तनाव फैलने की आशंका है। फिलहाल पुलिस ने तीनों सांसदों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव समेत तमाम विपक्षी सांसदों ने शुक्रवार को अयोध्या में राम मंदिर चढ़ावा अनियमितता मामले को लेकर संसद में अनोखा विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान विपक्षी सांसदों की ओर से संसद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की गैरमौजूदगी पर भी सवाल उठाए गए।

पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव साधु के वेश में संसद पहुंचे, जहां उन्होंने नुक्कड़ नाटक जैसा प्रदर्शन किया। अयोध्या में राम मंदिर चढ़ावा अनियमितता के आरोपों को सामने लाने के लिए पप्पू यादव सांकेतिक तौर पर दान पात्र लाए। विरोध प्रदर्शन के दौरान राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, प्रियंका गांधी और कई दूसरे विपक्षी नेताओं को सांकेतिक दान पात्र (बॉक्स) में दान करते देखा गया।

साधु के वेश में बैठे पप्पू यादव की ओर से नारे लगाए गए। पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा, "राम राम जपियो रे, सब माल हड़पियो रे।"

शिवजी को प्रसन्न करने का रामबाण उपाय है रुद्राभिषेक

श्रावण माह 30 जुलाई से 28 अगस्त तक रहेगा। इस माह में कई व्रत-त्योहार, जैसे नाग पंचमी, रक्षाबंधन व सावन शिवरात्रि मनाए जाएंगे। हिंदू पंचांग के अनुसार शिव आराधना का पावन श्रावण माह इस बार 30 जुलाई से 28 अगस्त तक चलेगा। पूरे माह शिव उपासकों को लगातार पूजा-अर्चना का अवसर मिलेगा। शिव मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ने की पूरी संभावना है। मंदिरों में विशेष आयोजन शुरू हो चुके हैं।

शास्त्रों में मिलता है रुद्राभिषेक का वर्णन

श्रावण माह में शिवजी का रुद्राभिषेक करने से जीवन में शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। साथ ही कोई बड़ी सफलता प्राप्त होती है। ऐसे परिवार पर हमेशा भगवान शिव की कृपा बनी रहती है। कहा जाता है कि रुद्राभिषेक करने से रोगों से छुटकारा मिलता है। इतना ही नहीं, इससे सभी मनोकामनाएं भी पूरी होती हैं। यदि आप सावन शिवरात्रि, सावन सोमवार या सावन प्रदोष के दिन रुद्राभिषेक विधि-विधान से करेंगे, तो आपको चमत्कारिक बदलाव देखने को मिलेंगे। शास्त्रों में रुद्राभिषेक को शिव जी को प्रसन्न करने का रामबाण उपाय बताया गया है भगवान शंकर के प्रिय माह सावन में शिवलिंग पर रुद्राभिषेक करने से कई विपदाओं से मुक्ति मिलती है।
रुद्राभिषेक करने से उत्तम फलों की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में भी रुद्राभिषेक का वर्णन किया गया है। रुद्राभिषेक करने से घर में शांति बनी रहती है और ग्रहों का बुरा प्रभाव भी कम होता है।

सावन का महत्व

हिंदू धर्म में सावन माह को भक्ति, व्रत, और साधना का महिना माना जाता है। मान्यता है कि इस समय सृष्टि का संचालन स्वयं भगवान शिव करते हैं। इस दौरान भक्त सोमवार का व्रत, रुद्राभिषेक, और शिवपुराण पाठ करते हैं। विशेष रूप से कुंवारी कन्याओं द्वारा किए गए सोमवार व्रत को विवाह संबंधी बाधाओं को दूर करने वाला और मनचाहा जीवनसाथी पाने वाला व्रत माना गया है। इस पावन अवसर पर शिव मंदिरों में विशेष सजावट, जलाभिषेक, बेलपत्र अर्पण और रात्रि जागरण जैसे कार्यक्रमों की तैयारियां भी जोरों पर हैं।

सावन महीने के हर मंगलवार को रखा जाता है मंगला गौरी व्रत

मंगला गौरी व्रत सावन महीने के हर मंगलवार को रखा जाता है और यह देवी पार्वती जिनका एक नाम गौरी भी है, उन्हें समर्पित है। मंगला गौरी व्रत सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करते हुए रखती हैं। वहीं, अविवाहित लड़कियां मनपसंद जीवनसाथी और शीघ्र विवाह के लिए यह व्रत रखती हैं। ऐसा माना जाता है कि मंगला गौरी व्रत रखने से कुंडली में मंगल दोष के नकारात्मक प्रभाव कम होते हैं और घर में सुख, समृद्धि और शांति बनी रहती है।

मंगला गौरी व्रत का महत्व

- मंगला गौरी व्रत रखने से विवाहित महिलाओं के वैवाहिक जीवन में सुख-शांति और समृद्धि आती है। इस व्रत को रखने से पति को लंबी आयु मिलती है और उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- ऐसी मान्यता है कि देवी पार्वती जिन्होंने भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए घोर तपस्या की थी, इस व्रत को करने वाली सुहागिन महिलाओं को अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद देती हैं।
- यह पति-पत्नी के रिश्ते में प्रेम, समझ और तालमेल को बढ़ाता है जिससे गृहस्थी खुशहाल रहती है। अविवाहित कन्याओं के लिए मंगला गौरी व्रत शीघ्र विवाह और मनपसंद जीवनसाथी की प्राप्ति के लिए अत्यंत प्रभावी माना जाता है।
- जो लड़कियां योग्य वर की तलाश में हैं या विवाह में किसी प्रकार की बाधा का सामना कर रही हैं उन्हें यह व्रत पूरी श्रद्धा से करने की सलाह दी जाती है। देवी पार्वती की कृपा से उनकी इच्छाएं पूरी होती हैं और उन्हें सुयोग्य जीवनसाथी मिलता है जो उनके जीवन को सुखमय बनाता है।
- मंगला गौरी व्रत कुंडली में मंगल दोष के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में सहायक होता है। मंगल दोष के कारण विवाह में देरी, वैवाहिक जीवन में समस्याएं या अन्य कष्ट आ सकते हैं।
- इस व्रत को करने से मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव शांत होते हैं, जिससे जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह व्यक्ति को साहस और आत्मविश्वास भी प्रदान करता है।
- जिन दंपत्तियों को संतान प्राप्ति में कठिनाई आ रही है, उनके लिए भी मंगला गौरी व्रत लाभकारी माना जाता है। देवी पार्वती को मातृत्व और सृजन की देवी माना जाता है।
- इस व्रत को सच्चे मन से करने से उनकी कृपा प्राप्त होती है और संतान सुख की प्राप्ति में मदद मिलती है। यह व्रत संतान के स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य के लिए भी शुभ फलदायी होता है।

आखिर क्यों भगवान शिव को कहा जाता है महाकाल

सावन का महीना शुरू हो गया है। ऐसे में हर तरफ आप भगवान शिव की पूजा-अर्चना करते हुए लोगों को देखती होंगी। भगवान शिव को कई नामों से पुकारा जाता है। उन्हें महादेव, भोलेनाथ, शंकर, शंभू, आदि नामों से पुकारा जाता है, लेकिन आखिर क्यों उन्हें महाकाल पुकारा जाता है?

आखिर भगवान शिव को यह नाम क्यों मिला?

पौराणिक कथाओं के अनुसार उज्जैन में एक शिव भक्त ब्राह्मण निवास करता था। यहां पर रहने वाले लोग दूषण नाम के राक्षस के प्रकोप से डरते थे। लोग उसे काल के नाम से जानते थे। ब्रह्मा जी से दूषण को कई शक्तियां मिली थी, जिनका दुरुपयोग कर वह निर्दोष लोगों को परेशान करता था। राक्षस की शक्तियों के प्रकोप से ब्राह्मण काफी दुखी था, उसने भगवान शिव से राक्षस के नाश की प्रार्थना की, लेकिन भगवान ने काफी वक्त तक कुछ नहीं किया। प्रार्थनाओं का असर न होता देख एक दिन ब्रह्म भगवान शिव से नाराज हो गए और उनका पूजन बंद कर दिया। अपने ब्राह्मण भक्त को दुखी देख भगवान शिव हुंकार के रूप में प्रकट हुए और दूषण का वध कर दिया। क्योंकि लोग दूषण को काल कहते थे, इसलिए उसके वध के कारण भगवान शिव का नाम महाकाल पड़ा।

क्या होता है महाकाल का मतलब?

काल का मतलब होता है समय और महाकाल का मतलब हुआ है वह जो समय से परे है अथवा उसका नियंत्रणकर्ता है। मान्यताओं के अनुसार, शिव जी प्रलय, विघटन या मृत्यु के देव हैं और वह हमारे समय यानी काल को भी नियंत्रित करते हैं।

महाकाल की पूजा

राक्षस का वध करने के कारण बाबा महाकाल की पूजा का विशेष महत्व होता है। ऐसा माना जाता है कि जो भी भक्त सच्चे मन से बाबा महाकाल की आराधना करता है, उसे कभी मृत्यु का भय नहीं होता है।

सावन में कांवड़ का है विशेष महत्व, कितने तरह की होती है ये यात्रा

सावन मास के प्रारंभ होने के साथ-साथ कांवड़ यात्रा भी शुरू हो जाती है। कांवड़ यात्रा में कांवड़िया गंगा नदी में स्नान कर लोटे में जल भरकर से शिव मंदिर में सावन शिवरात्रि के दिन अभिषेक करते हैं। कांवड़िया भगवान शिव से प्रार्थना कर आशीर्वाद मांगते हैं, इस कांवड़ यात्रा को लेकर यह मान्यता है कि भगवान शिव कांवड़िया की सभी इच्छाएं पूरी करते हैं।

कितने प्रकार की होती है कांवड़ यात्रा

सामान्य कांवड़ यात्रा

सामान्य कांवड़ यात्रा में शिव भक्त चलते-चलते जब थक जाते हैं तो बीच-बीच में आराम कर सकते हैं। आराम के दौरान कांवड़ियों को इस बात का खास ध्यान देना पड़ता है कि कांवड़ बीच में जमीन पर न रखें। कांवड़िया अपने साथ स्टैंड लेकर चलते हैं, साथ ही वे कांवड़ को किसी पेड़ की डाल पर भी टांग देते हैं।

डाक कांवड़ यात्रा

डाक कांवड़ यात्रा में कांवड़िया विश्राम नहीं करता है। जब वह पवित्र नदी से स्नान कर जल भरता है तब वह सीधा मंदिर में जाकर रुकता है। डाक कांवड़ यात्रा करने वाले कांवड़िया बीच में किसी भी चीज के लिए नहीं रुकते और उनकी यात्रा को सरल बनाने के लिए मार्ग में कई तरह की उचित व्यवस्था की जाती है।

खड़ी कांवड़ यात्रा

खड़ी कांवड़ यात्रा में साधक कांवड़ लेकर चलते हैं। इस खड़ी कांवड़ यात्रा में 2-3 लोग साथ में चलते हैं, जिसमें एक के थकने पर दूसरे लोग कांवड़ लेकर साधक की यात्रा पूरी करने में सहायता करते हैं।

दांडी कांवड़ यात्रा

कांवड़ यात्रा के सभी प्रकारों में दांडी कांवड़ यात्रा सबसे कठिन मानी गई है। इस दांडी कांवड़ यात्रा में कांवड़िया पवित्र नदी से स्नान कर जल भरता है और मंदिर तक दंडवती करते हुए पहुंचता है। इस यात्रा में सबसे ज्यादा समय लगता है।

कौन सी कांवड़ यात्रा है सबसे सरल और सबसे कठिन

सबसे सरल की बात करें तो सामान्य कांवड़ यात्रा सबसे सरल है। इस यात्रा में कांवड़िया बीच-बीच में कांवड़ को स्टैंड पर रखकर आराम कर सकता है। वहीं दांडी कांवड़िया कांवड़ यात्रा के सभी प्रकार में सबसे ज्यादा कठिन है। इस कांवड़ यात्रा में कांवड़िया दंडवती करते हुए भगवान शिव को कांवड़ का जल अर्पित करता है।

यात्रा के दौरान कांवड़ को जमीन में क्यों नहीं रखना चाहिए?

सावन मास में कांवड़ यात्रा का विशेष महत्व है, इस माह में कांवड़िया कांवड़ में जल भरकर शिव जी का अभिषेक करते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि कांवड़ को जमीन पर क्यों नहीं रखते? कांवड़ को जमीन में नहीं रखने के पीछे एक धार्मिक मान्यता है। इस मान्यता के अनुसार कांवड़ियों का मानना है कि कांवड़ भगवान शिव का स्वरूप है, जिसे कभी भी जमीन में रखकर उसका अपमान नहीं करना चाहते हैं। इसके अलावा कांवड़ में भरा हुआ जल भगवान शिव को चढ़ता है, ऐसे में कांवड़िया जमीन पर रखे हुए जल को भगवान शिव के ऊपर नहीं चढ़ाते हैं। जिस मार्ग में कांवड़िया विश्राम के लिए रुकते हैं, उस स्थान में कावड़िया स्टैंड या पेड़ पर कांवड़ को रखते हैं, ताकि कांवड़ जमीन को स्पर्श न हो।

सावन के मंगला गौरी व्रत के दिन महिलाएं जरूर करें इन चीजों का दान

सनातन धर्म में मंगला गौरी का व्रत माता पार्वती को समर्पित है। इस दिन विशेष रूप से दान-पुण्य करने का विधान है। आइए इस लेख में विस्तार से जानते हैं कि किन चीजों का दान करने से लाभ हो सकता है।

हिंदू धर्म में सावन का महीना भगवान शिव के साथ-साथ माता पार्वती को समर्पित होता है। इस पवित्र महीने के दौरान पड़ने वाले हर मंगलवार को मंगला गौरी व्रत रखा जाता है। यह व्रत विशेष रूप से सुहागिन स्त्रियों द्वारा अपने पति की लंबी आयु, अखंड सौभाग्य और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना के लिए किया जाता है।
कुंवारी कन्याएं भी मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए यह व्रत रखती हैं। अब ऐसे में जो महिलाएं इस दिन दान-पुण्य कर रही हैं, उन्हें किन चीजों का दान करने से लाभ हो सकता है।

करें हरी चूड़ियों का दान

मंगला गौरी व्रत विशेष रूप से सुहागिन महिलाओं द्वारा अपने पति की लंबी आयु और अखंड सौभाग्य के लिए रखा जाता है। चूड़ियां सुहाग का प्रतीक होती हैं और इनका दान करने से माता पार्वती प्रसन्न होती हैं, जिससे सुहागिनों को सुखी वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद मिलता है। माना जाता है कि मंगला गौरी व्रत के दिन सुहागिन महिला को चूड़ियों का दान करने से वैवाहिक जीवन में प्रेम, शांति और मधुरता आती है। पति-पत्नी के बीच के कलेश दूर होते हैं और संबंध मजबूत होते हैं। जिन लोगों की कुंडली में मंगल दोष होता है, उनके लिए भी मंगला गौरी व्रत और इस दिन सुहाग की वस्तुओं, विशेषकर चूड़ियों का दान करना बहुत लाभकारी माना जाता है। इससे मंगल दोष के नकारात्मक प्रभाव कम होते हैं।

काजल का दान

ज्योतिष शास्त्र में काजल को बुरी नज़र से बचाने वाला और नकारात्मक ऊर्जा को दूर रखने वाला माना गया है। मंगला गौरी व्रत के दिन काजल का दान करने से वैवाहिक जीवन को लगी बुरी नजर उतर जाती है और दांपत्य जीवन में नकारात्मकता भी नष्ट होने लगती है। मंगला गौरी व्रत मुख्य रूप से सुहागिन महिलाओं द्वारा अखंड सौभाग्य और पति की लंबी आयु के लिए रखा जाता है।

मसूर की दाल का दान

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, मंगल गौरी व्रत मंगल ग्रह से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए रखा जाता है। मसूर की दाल का संबंध मंगल ग्रह से होता है, और इसे दान करने से कुंडली में मंगल की स्थिति मजबूत होती है, जिससे जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। जिन लोगों की कुंडली में मंगल दोष होता है, उनके विवाह में बाधाएं आती हैं या वैवाहिक जीवन में परेशानियां रहती हैं।
मंगला गौरी व्रत के दिन मसूर की दाल का दान करने से इस दोष का प्रभाव कम होता है और वैवाहिक जीवन सुखमय बनता है।

सप्ताहिक

बदलते अल्फाज़

खबरों का नया स्वरूप

ट्राईसिटी
चंडीगढ़/पंचकूला/
मोहाली

चंडीगढ़, रविवार 02 अगस्त
से 08 अगस्त 2026

www.badlteyalfaaj.com

E-mail:badaltealfaaz@gmail.com

हरिद्वार में कांवड़ लेने गए चंडीगढ़ के 4 किशोरों की डूबने से मौत

चंडीगढ़ के सेक्टर-29 और 30 में पसरा मातम

एस. के. चौधरी

चंडीगढ़। हरिद्वार में कांवड़ लेने गए चंडीगढ़ के चार किशोर श्रद्धालुओं की डूबने से दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों में तीन किशोर सेक्टर-30 और एक सेक्टर-29 का निवासी था। सभी की उम्र 16 से 17 वर्ष के बीच बताई जा रही है। शुक्रवार शाम इस हृदयविदारक हादसे की सूचना मिलते ही दोनों सेक्टरों में शोक की लहर दौड़ गई और पीड़ित परिवारों में चीख-पुकार मच गई।

बाइक से हरिद्वार रवाना हुए थे युवक

परिजनों के अनुसार, शुक्रवार देर रात सेक्टर-29 और 30 से कुछ युवक बाइकों पर सवार होकर हरिद्वार कांवड़ यात्रा के लिए निकले थे। शुक्रवार शाम करीब 6:05 बजे हरिद्वार से परिजनों के पास फोन आया, जिसमें बताया गया कि स्नान के दौरान चार युवक पानी में डूब गए हैं और उनकी मौत हो चुकी है।

मृतकों की पहचान

सूत्रों के मुताबिक, मृतकों की पहचान नीतीश (सेक्टर-30), शिवांशु (सेक्टर-30), बिट्टू (सेक्टर-30), एक अन्य युवक (सेक्टर-29) के रूप में हुई है।

सूखे गंगनहर के गहरे गड्ढे बने हादसे का कारण

बताया जा रहा है कि जिस स्थान पर यह हादसा हुआ, वहां गंग नहर किसी कारणवश बंद थी। नहर भले ही सूखी थी, लेकिन बीच-बीच में बने गहरे गड्ढों में पानी भरा हुआ था। चारों किशोर स्नान के लिए पानी में उतरे, लेकिन गहराई का सही अंदाजा न होने के कारण वे डूब गए। साथ मौजूद अन्य साथियों ने तुरंत इस घटना की सूचना परिजनों और स्थानीय प्रशासन को दी।

नेताओं ने जताया दुख, पुलिस जांच में जुटी

हादसे की खबर मिलते ही वार्ड नंबर-18 के पार्षद तरुण मेहता पीड़ित परिवारों के घर पहुंचे और शोक संतप्त परिजनों से मुलाकात की। इसके अलावा भाजपा नेता दविंदर सिंह बबला और रवि रावत भी मौके पर पहुंचे तथा शोकाकुल परिवारों को ढांढस बंधाया।

उधर, घटना की सूचना मिलते ही हरिद्वार पुलिस और स्थानीय प्रशासन मौके पर पहुंचा। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर आवश्यक कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी है और मामले की जांच की जा रही है।

मनीमाजरा में एनओसी का मुद्दा फिर गरमाया, डिप्टी मेयर के बाद नगर निगम हाउस में पूर्व मेयर ने उठाई आवाज

चंडीगढ़। मनीमाजरा में मकानों की एनओसी (नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट) का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है। इस समस्या को लेकर डिप्टी मेयर सुमन अमित शर्मा लंबे समय से लगातार आवाज उठा रही हैं। हाल ही में उन्होंने नगर निगम आयुक्त को मांग पत्र सौंपकर मनीमाजरा सब-ऑफिस में स्थायी अधिकारी नियुक्त करने और लंबित एनओसी फाइलों का पूरा रिकॉर्ड सार्वजनिक करने की मांग की थी। अब यही मुद्दा नगर निगम हाउस की बैठक में भी जोर-शोर से उठा।

नगर निगम हाउस की बैठक में पूर्व मेयर एवं पार्षद सरबजीत कौर ढिल्लों ने मनीमाजरा के लोगों को वर्षों से एनओसी मिलने में हो रही देरी का मामला उठाते हुए अधिकारियों से सवाल किया कि जब एनओसी जारी करनी ही है तो इसके लिए तय समय-सीमा क्यों नहीं बनाई जाती। उन्होंने कहा कि लोगों को अपनी ही संपत्ति से जुड़े कार्यों के लिए दो-दो साल तक सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं, जो उचित नहीं है। बैठक के दौरान सरबजीत कौर ढिल्लों ने पुरानी और वर्तमान में जारी की जा रही एनओसी की प्रतियां नगर निगम आयुक्त को सौंपते हुए दोनों में अंतर भी बताया। उन्होंने कहा कि पहले जारी होने वाली एनओसी में स्पष्ट रूप से "No Objection Certificate for Electricity, Water and Sewer Connection" लिखा होता था, जबकि अब यह लाइन हटा दी गई है।

मौलीजागरां में पेयजल संकट पर भड़की भाजपा

शशी शंकर तिवारी ने नगर निगम को घेरा, प्रशासक से दौरा करने की मांग

संवाददाता, चंडीगढ़।

मौलीजागरां में लगातार गहराते पेयजल संकट और मूलभूत सुविधाओं की अनदेखी को लेकर चंडीगढ़ भाजपा के प्रदेश सचिव शशी शंकर तिवारी ने नगर निगम प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने निगम अधिकारियों पर कॉलोनियों के वासियों के साथ सौतेला व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए स्थिति को बेहद चिंताजनक बताया।

पानी की किल्लत और जनरेटर न होने पर उठाए सवाल

भाजपा नेता शशी शंकर तिवारी ने प्रेस बयान जारी कर कहा कि मौलीजागरां के लोग आए दिन पानी की भारी समस्या से जूझ रहे हैं।

अस्थायी समाधानः दो दिन पानी आपूर्ति ठीक रहती है, तो अगले ही दिन ट्यूबवेल की मोटर जल जाती है।

स्वास्थ्य का खतराः क्षेत्र में कई बार गंदे पानी की आपूर्ति के कारण डायरिया जैसी बीमारियाँ फैलने का खतरा बन जाता है।

जनरेटर की मांगः स्थानीय जनप्रतिनिधियों की लगातार कोशिशों के बावजूद आज तक ट्यूबवेलों पर बैकअप जनरेटर स्थापित नहीं किए जा सके हैं।

वीआईपी सेक्टरों और कॉलोनियों में दोहरा रवैया

तिवारी ने सवाल उठाया कि जब मौलीजागरां के निवासी नगर निगम के सभी करों (टैक्स) का समय पर भुगतान कर रहे हैं, तो उनके साथ यह भेदभाव क्यों?

"वी.आई.पी. सेक्टरों में जरा सी समस्या आते ही पूरा प्रशासनिक अमला तुरंत हरकत में आ जाता है, लेकिन कॉलोनियों और विकास नगर जैसे क्षेत्रों की गंभीर समस्याओं पर सिर्फ टाल-मटोल का रवैया अपनाया जाता है।"

उन्होंने विकास नगर का उदाहरण देते हुए कहा कि निगम की करोड़ों रुपये की दुकानें मूलभूत सुविधाओं के अभाव में आज खंडहर में तब्दील हो चुकी हैं।

प्रशासक से गुहार

क्षेत्र की दयनीय स्थिति को देखते हुए शशी शंकर तिवारी ने चंडीगढ़ के प्रशासक श्री गुलाब चंद कटारिया से अपील की है कि वे स्वयं मौलीजागरां का दौरा करें और जमीनी हकीकत को देखकर आम जनता को राहत दिलाने के लिए कड़े कदम उठाएं।

24 घंटे के भीतर ई-रिक्शा सवार 4 शातिर स्नैचर गिरफ्तार, डिलीवरी बॉय से छीना मोबाइल बरामद

संवाददाता, पंचकूला।

पंचकूला पुलिस ने मुस्तैदी दिखाते हुए एक डिलीवरी राइडर से मोबाइल फोन छीनने की वारदात का महज 24 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया है। पुलिस ने मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। उनके कब्जे से छीना गया मोबाइल फोन और वारदात में इस्तेमाल किया गया ई-रिक्शा भी बरामद कर लिया गया है।

सेक्टर-16/17 डिवाइडिंग रोड की घटना

जानकारी के अनुसार, 29 जुलाई की रात कृष्ण कुमार नाम का एक डिलीवरी राइडर सेक्टर-17 में ऑर्डर डिलीवर करने के बाद अपने घर लौट रहा था। सेक्टर-16/17 डिवाइडिंग रोड पर जब वह अपने मोबाइल में अगला ऑनलाइन ऑर्डर चेक करने के लिए रुका, तभी एक ई-रिक्शा उसके पास आकर रुका। ई-रिक्शा में चार युवक सवार थे, जिनमें से दो ने उतरकर कृष्ण कुमार को पकड़ा और उसका मोबाइल फोन छीनकर चारों मौके से फरार हो गए।

गुप्त सूचना के आधार पर हुई कार्रवाई

मामले की जांच करते हुए पुलिस चौकी सेक्टर-16 के इंचार्ज सिंहराज के नेतृत्व में पुलिस टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर 30 जुलाई को सेक्टर-17/18 पुलिया के पास से चारों आरोपियों को दबोच लिया। पकड़े गए आरोपियों की पहचान धर्मेंद्र, क्रिश, दीपू और सुनील के रूप में हुई है।

पुलिस ने आरोपियों को अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत (जेल) में भेज दिया गया है।

चंडीगढ़ के सेक्टर-42 में कब्जा लेने पहुंची महिला पर फायरिंग, आरोपी एडवोकेट गिरफ्तार

चंडीगढ़। सेक्टर-42 स्थित मकान नंबर 2987 में शनिवार को कब्जा लेने पहुंची महिला पर एक वकील ने गोली चला दी। सिर में गोली लगने से महिला गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसे इलाज के लिए तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी एडवोकेट को गिरफ्तार कर लिया है।

पीड़िता की पहचानः घायल महिला की पहचान मनजिंदर कौर के रूप में हुई है। वह कोर्ट के आदेश के बाद तीन पुलिसकर्मियों के साथ अपने मकान का कब्जा लेने पहुंची थी।

आरोपी की गिरफ्तारीः गोली चलाने वाले आरोपी वकील की पहचान जे.पी.एस. चड्ढा (उम्र लगभग 67 वर्ष) के रूप में हुई है, जिसे पुलिस ने मौके से हिरासत में ले लिया है।

हथियारः शुरूआती जानकारी के अनुसार, वारदात में दो नाली/लाइसेंसी हथियार का इस्तेमाल किया गया है।

पुलिस कार्रवाईः सूचना मिलते ही चंडीगढ़ पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी और स्थानीय पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल को सील कर दिया। फिलहाल पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है और घटना के पीछे के सभी कानूनी व विवादित पहलुओं की पड़ताल की जा रही है।

राज्यपाल ने युवाओं का किया आह्वान, नशे के खिलाफ लें शपथ

पंजाब के राज्यपाल ने 'माई भारत युवा कनेक्ट - नशा मुक्त अभियान' की तैयारियों की समीक्षा के लिए मुख्यमंत्रियों (कुलपतियों) के साथ बैठक की अध्यक्षता की

संवाददाता, चंडीगढ़।

पंजाब के राज्यपाल और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने शनिवार को पंजाब लोक भवन, चंडीगढ़ में नशे के खिलाफ युवाओं को एकजुट करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान "माई भारत युवा कनेक्ट - नशा मुक्त अभियान" की तैयारियों की समीक्षा के लिए पंजाब और चंडीगढ़ के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों (Vice-Chancellors) के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में पंजाब के राज्यपाल के अतिरिक्त मुख्य सचिव विवेक प्रताप सिंह, चंडीगढ़ के उपायुक्त श्री निशांत यादव, चंडीगढ़ प्रशासन की स्कूल शिक्षा सचिव प्रेरणा पुरी (आईएएस), पंजाब विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. मीनाक्षी गोयल, माई भारत युवा कनेक्ट पंजाब की निदेशक रशमीत कौर, माई भारत चंडीगढ़ के जिला युवा अधिकारी विनय कुमार और ललित जैन (आईएएस) व्यक्तिगत रूप से उपस्थित थे, जबकि पंजाब और चंडीगढ़ के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने वर्चुअल माध्यम से भाग लिया।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने इस बात पर जोर दिया कि शैक्षणिक संस्थान युवाओं को स्वस्थ, अनुशासित और जिम्मेदार जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करके नशा मुक्त समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि 'माई भारत युवा कनेक्ट - नशा मुक्त अभियान' मादक पदार्थों के सेवन के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन में छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों को एकजुट करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है।

राज्यपाल ने सभी विश्वविद्यालयों को माई भारत पोर्टल के माध्यम से 'नशा मुक्ति ई-प्रतिज्ञा' (ई-शपथ) अभियान में छात्रों, संकाय सदस्यों और स्वयंसेवकों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने विश्वविद्यालयों को 2 अगस्त 2026 को सुबह 10:00 बजे आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रम के लिए तुरंत तैयारियां शुरू करने का निर्देश दिया, जिसके दौरान माननीय प्रधानमंत्री वर्चुअल रूप से प्रतिभागियों को संबोधित करेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि हर पात्र छात्र को माई भारत पोर्टल पर पंजीकरण करने, नशा मुक्ति की शपथ लेने और ई-प्रमाण पत्र डाउनलोड करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए, राज्यपाल ने प्रत्येक विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के विभागों, घटक कॉलेजों, संबद्ध कॉलेजों और माई भारत के अधिकारियों के साथ तालमेल बिठाने के लिए एक समर्पित नोडल अधिकारी नामित करने का निर्देश दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि स्वयंसेवक नामांकन और शपथ पंजीकरण के लिए लक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, और हर स्तर पर प्रगति की नियमित निगरानी की जानी चाहिए।

कटारिया ने आगे निर्देश दिया कि यह अभियान केवल विश्वविद्यालय मुख्यालयों तक सीमित न रहे, बल्कि सभी घटक और सम्बद्ध कॉलेजों में सक्रिय रूप से लागू किया जाए। उन्होंने विश्वविद्यालयों से अपील की कि वे संस्थान की वेबसाइटों, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों, छात्र समूहों, डिजिटल स्क्रीनों, नोटिसों और अन्य उपलब्ध संचार माध्यमों के जरिए अभियान का व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि नशा मुक्त भारत का संदेश हर युवा नागरिक तक पहुंचे।

राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों से यह भी आग्रह किया कि वे 'नशा मुक्त भारत अभियान' की गति को बनाए रखने के लिए साल भर सेमिनार, जागरूकता व्याख्यान, रैलियां, प्रतियोगिताएं, शपथ अभियान और अन्य आउटरीच कार्यक्रम आयोजित करें। उन्होंने संस्थानों को नियमित रूप से सभी गतिविधियों के फोटो, वीडियो और रिपोर्ट माई भारत पोर्टल पर अपलोड करने तथा प्रभावी निगरानी और दस्तावेजीकरण के लिए भागीदारी अपडेट साझा करने का निर्देश दिया। तकनीकी समस्याओं का सामना करने वाले संस्थानों को समय पर सहायता के लिए नामित माई भारत अधिकारियों से तुरंत संपर्क करने की सलाह दी गई।

'नशा मुक्त पंजाब' और 'नशा मुक्त भारत' के संकल्प को दोहराते हुए श्री गुलाब चंद कटारिया ने विश्वविद्यालयों से छात्रों, शिक्षकों और युवा स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करके इस अभियान को एक जन आंदोलन में बदलने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि शैक्षणिक संस्थानों के सामूहिक प्रयासों से यह अभियान युवा पीढ़ी को मादक पदार्थों के सेवन को नकारने और एक स्वस्थ, जागरूक और जिम्मेदार समाज का राजदूत बनने के लिए प्रेरित करेगा।

चंडीगढ़ में पंजाब के शिक्षा मंत्री के आवास के बाहर एबीवीपी का प्रदर्शन, पेपर लीक मामलों को लेकर मांगा इस्तीफा

चंडीगढ़। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद चंडीगढ़ ने राज्य में बार-बार हो रहे परीक्षा पेपर लीक मामलों के विरोध में आज पंजाब के शिक्षा मंत्री हरजोत बैंस के निवास स्थान के बाहर जोरदार प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने हाल ही में हुए फार्मेसी परीक्षा पेपर लीक का विरोध करते हुए पोस्टर और बैनर दिखाए, छात्रों के साथ हो रहे अन्याय को उजागर किया और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए एबीवीपी पंजाब के प्रदेश मंत्री जसकरण सिंह भुल्लर ने कहा कि पंजाब में लगातार हो रही पेपर लीक की घटनाएं लाखों छात्रों के भविष्य को अंधकार में डाल रही हैं। उन्होंने बताया कि यह कोई पहली घटना नहीं है; इससे पहले ADO परीक्षा, नायब तहसीलदार परीक्षा, 12वीं कक्षा की अंग्रेजी परीक्षा और अब फार्मेसी परीक्षा का पेपर लीक हो चुका है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने समय रहते कड़े कदम नहीं उठाए, तो छात्रों का परीक्षा प्रणाली से विश्वास पूरी तरह उठ जाएगा।

पंजाब यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स काउंसिल के अध्यक्ष गौरववीर सोहल ने कहा कि एबीवीपी का यह आंदोलन यहीं खत्म नहीं होगा। यदि पंजाब सरकार पेपर लीक मामलों में ठोस कार्रवाई करने और छात्रों को न्याय दिलाने में विफल रहती है, तो आने वाले दिनों में संगठन इस आंदोलन को और तेज करते हुए पूरे राज्य में व्यापक प्रदर्शन करेगा।

प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने कई एबीवीपी कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया और पुलिस वाहनों में ले गई। विद्यार्थी परिषद ने आरोप लगाया कि पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे छात्रों के खिलाफ तानाशाही रवैया अपनाया और उनकी लोकतांत्रिक आवाज को दबाने का प्रयास किया।

एबीवीपी की मुख्य मांगें:

- सभी पेपर लीक मामलों की निष्पक्ष और समयबद्ध जांच की जाए।
- दोषियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई हो।
- राज्य में पारदर्शी परीक्षा प्रणाली स्थापित की जाए।
- पंजाब के शिक्षा मंत्री हरजोत बैंस नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए तुरंत अपने पद से इस्तीफा दें।
- परिषद ने दोहराया कि छात्रों के भविष्य के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास निधि से 10 लाख रुपये की अनुदान राशि जारी की गई

एस. के. चौधरी

चंडीगढ़। शिक्षा क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों के तहत चंडीगढ़ के सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी ने शनिवार को देव समाज कॉलेज फॉर गर्ल्स, सेक्टर 45, चंडीगढ़ में एक नई स्थापित कंप्यूटर लैब का उद्घाटन किया। तिवारी ने इस सुविधा को स्थापित करने के लिए अपनी सांसद निधि से लगभग 10 लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया था।

सभा को संबोधित करते हुए तिवारी ने कहा कि शिक्षा का विकास हमेशा से उनकी प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक रहा है। उन्होंने कहा कि एक शिक्षित व्यक्ति परिवार और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए बेहतर ढंग से सक्षम होता है। उन्होंने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में देव समाज कॉलेज फॉर गर्ल्स द्वारा दिए जा रहे महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की।

उन्होंने कहा कि नवस्थापित कंप्यूटर लैब छात्रों के लिए अत्यधिक फायदेमंद साबित होगी और उन्हें अपने डिजिटल और तकनीकी कौशल को विकसित करने के बेहतर अवसर प्रदान करेगी। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में योगदान के लिए कॉलेज प्रबंधन समिति और समस्त स्टाफ की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि आज महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

तिवारी ने नवस्थापित कंप्यूटर लैब का दौरा भी किया और छात्रों से बातचीत कर उनकी शैक्षणिक जरूरतों और सुविधाओं के बारे में प्रतिक्रिया (फीडबैक) ली।

इस अवसर पर बोलते हुए चंडीगढ़ कांग्रेस अध्यक्ष एच.एस. लकी ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा शिक्षा को मजबूत करने और युवाओं को सशक्त बनाने पर जोर दिया है। नीट पेपर लीक मुद्दे का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि युवाओं की आवाज को दबाया नहीं जा सकता और कांग्रेस पार्टी देश के युवाओं के साथ मजबूती से खड़ी है।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों में कॉलेज की प्रिंसिपल नीरू मलिक और चंद्रमुखी शर्मा के अलावा कॉलेज प्रबंधन और स्टाफ के अन्य सदस्य शामिल थे।

भाजपा चंडीगढ़ ने श्री गुरु रविदास जी की 650वीं जयंती के अवसर पर आयोजित की महत्वपूर्ण बैठक

संवाददाता, चंडीगढ़।

संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी की 650वीं जयंती के पावन अवसर पर, भारतीय जनता पार्टी, चंडीगढ़ प्रदेश ने 'श्री गुरु रविदास समरस संकल्प अभियान' को लेकर प्रदेश कार्यालय, सेक्टर-33, 'कमलम' में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया। बैठक में अभियान के आगामी कार्यक्रमों पर विस्तृत चर्चा हुई और तैयारियों की समीक्षा की गई।

इस बैठक में अभियान के संयोजक एवं प्रदेश महामंत्री रामवीर भट्टी, पूर्व महापौर रविकांत शर्मा, प्रदेश मीडिया प्रभारी रवि रावत, पूर्व महापौर राजेश कालिया, राजपाल डोगर, पूर्व प्रदेश सचिव देवी सिंह, पूर्व पार्षद राजेंद्र कौर रत्तू, जिलाध्यक्ष रविंदर मलिक, रेखा सूद सहित अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बैठक में जानकारी दी गई कि संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी की 650वीं जयंती के शुभ अवसर पर 29 जुलाई 2026 से 20 फरवरी 2027 तक देशभर में 'श्री गुरु रविदास अमृत संकल्प अभियान' आयोजित किया जाएगा। इस अभियान के तहत संत गुरु रविदास जी के जीवन, दर्शन और समानता, भक्ति, सेवा, सामाजिक न्याय व मानवता के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और जनसंपर्क गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी। अभियान के अंतर्गत देशभर में कई कार्यक्रम आयोजित होंगे। इसकी शुरूआत 29 जुलाई को कलश यात्रा के साथ हुई। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर देशभर के रविदास मंदिरों और प्रमुख सार्वजनिक स्थानों पर भव्य दीप प्रज्वलन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

'कलश वंदन अभियान' के तहत संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी की जन्मस्थली, श्री गोवर्धनपुर (वाराणसी) से पवित्र मिट्टी को 11,000 पवित्र कलशों में रखकर देश के विभिन्न राज्यों की राजधानियों में ले जाया जा रहा है। इसी क्रम में यह पवित्र कलश 31 जुलाई 2026 को चंडीगढ़ पहुँचेगा, जिसका भाजपा चंडीगढ़ प्रदेश द्वारा भव्य स्वागत किया जाएगा।

कलश यात्रा का चंडीगढ़ के प्रवेश बिंदु, बहलाना में शाम 4:00 बजे भव्य स्वागत किया जाएगा। इसके बाद यह जुलूस हलोमाजरा लाइट पॉइंट, हलोमाजरा चौक, रामदरबार से होते हुए इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2 पहुंचेगा और वहाँ से सेक्टर-31 मार्केट होते हुए माता चिंतपूर्णी मंदिर, सेक्टर-32 पहुँचेगा, जहाँ कलश यात्रा का औपचारिक समापन होगा।

भाजपा चंडीगढ़ प्रदेश ने सभी भक्तों, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों तथा शहरवासियों से अपील की है कि वे इस पवित्र अवसर पर बड़ी संख्या में भाग लें और संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी के समानता, सद्भाव, सेवा और मानवता के संदेश को घर-घर पहुँचाने में अपना योगदान दें।

किसी कंपनी भी को लोकल से ग्लोबल तक पहुंचाती है कंटेंट राइटिंग

हर कंपनी के पास एक ऐसी टीम होती है। जो कंपनी का सोशल मीडिया, ब्लॉग्स और वेबसाइट आदि को मैनेज करती है। ऐसे में आप भी इस क्षेत्र में अपनी स्किल्स को बढ़ाकर अपने कॅरियर की शुरूआत कर सकते हैं।

आज के दौर में हर कोई सोशल मीडिया का इस्तेमाल जमकर कर रहा है। वहीं आपने भी देखा होगा कि छोटी-बड़ी कंपनियों के भी सोशल मीडिया पर प्रोफाइल बने हैं, जिन पर हर रोज कुछ न कुछ अपडेट आता रहता है। सोशल मीडिया एप पर आप कंपनियों के बारे में विस्तृत जानकारी ले सकते हैं। आज के समय में कंपनी के यू-ट्यूब अकाउंट, ट्विटर, इंट्राग्राम, टेलीग्राम समेत तमाम पेजों को नियमित तौर पर मैनेज किया जाता है। हालांकि जब पहले सोशल मीडिया का जमाना नहीं था, तब कंपनी की पहचान सीमित हुआ करती थी। लेकिन सोशल मीडिया के इस दौर में हर कंपनी की अपनी पहचान लोकल से ग्लोबल तक है। इन सबमें कंटेंट राइटिंग का रोल सबसे ज्यादा अहम होता है। दरअसल, कंपनी को लोकल से ग्लोबल तक पहुंचाने में कंटेंट राइटिंग का रोल महत्वपूर्ण है, जिसके लिए हर कंपनी के पास एक ऐसी टीम होती है। जो कंपनी का सोशल मीडिया, ब्लॉग्स और वेबसाइट आदि को मैनेज करती है। इस हिसाब से देखा जाए, तो टीम में कंटेंट राइटर का पद सबसे ज्यादा अहम होता है।

बता दें कि कंटेंट राइटर कंपनी की पहचान, उसके प्रोडक्ट और कंपनी के बारे में जो लिखता है। उसी के आधार पर कंपनी मार्केट में ब्रांड बनकर उभरती है। यदि आप किसी कंपनी के बारे में अच्छे से जानना चाहते हैं, तो सोशल मीडिया या वेबसाइट पर उपलब्ध कराए जा रहे कंपनी द्वारा कंटेंट से तय होता है। इसके अलावा कंपनियां कंपनी के बारे में ई बुक, कंपनियों की वार्षिक विवरण पुस्तिका, प्रोडक्ट का यूजर मैनुअल या दीक्षांत समारोह का न्यूज लेटर आदि सब कंटेंट राइटर की तैयार करते हैं।

वर्तमान समय में तमाम वेबसाइट्स कंटेंट राइटर्स को मोटी पगार पर हायर करती हैं। यही कारण है कि 12वीं और ग्रेजुएशन पास अभ्यर्थी कंटेंट राइटिंग कर लाखों रुपए कमा रहे हैं। इसी वजह से लोग इसको एक प्रोफेशन को देख रहे हैं। ऐसे में इस फील्ड में आगे बढ़ने की तमाम संभावनाएं हैं। ऐसे में आप भी कंटेंट राइटिंग का कोर्स कर अपने सपने को साकार कर सकते हैं।

सैलरी

शुरूआत में एक कंटेंट राइटर के तौर पर कंपनी आपको सालान 2-3 लाख रुपए अदा करती हैं। वहीं समय के साथ अनुभव बढ़ने पर कंटेंट राइटर को सालान 4-5 लाख तक का पैकेज आसानी से मिल जाता है। बता दें कि आमतौर पर एक कंटेंट राइटर को 20 हजार से लेकर 35 हजार रुपए प्रतिमाह सैलरी मिलती है।

ऐसे बनाएं कॅरिअर

अगर आप भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, तो अभ्यर्थी डिजिटल मार्केटिंग, ग्रॉफिक्स डिजाइनिंग जैसे फील्ड में अपना कॅरियर बना सकते हैं। अभ्यर्थी घर बैठकर कई टेक्निकल कोर्सेस के साथ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं।

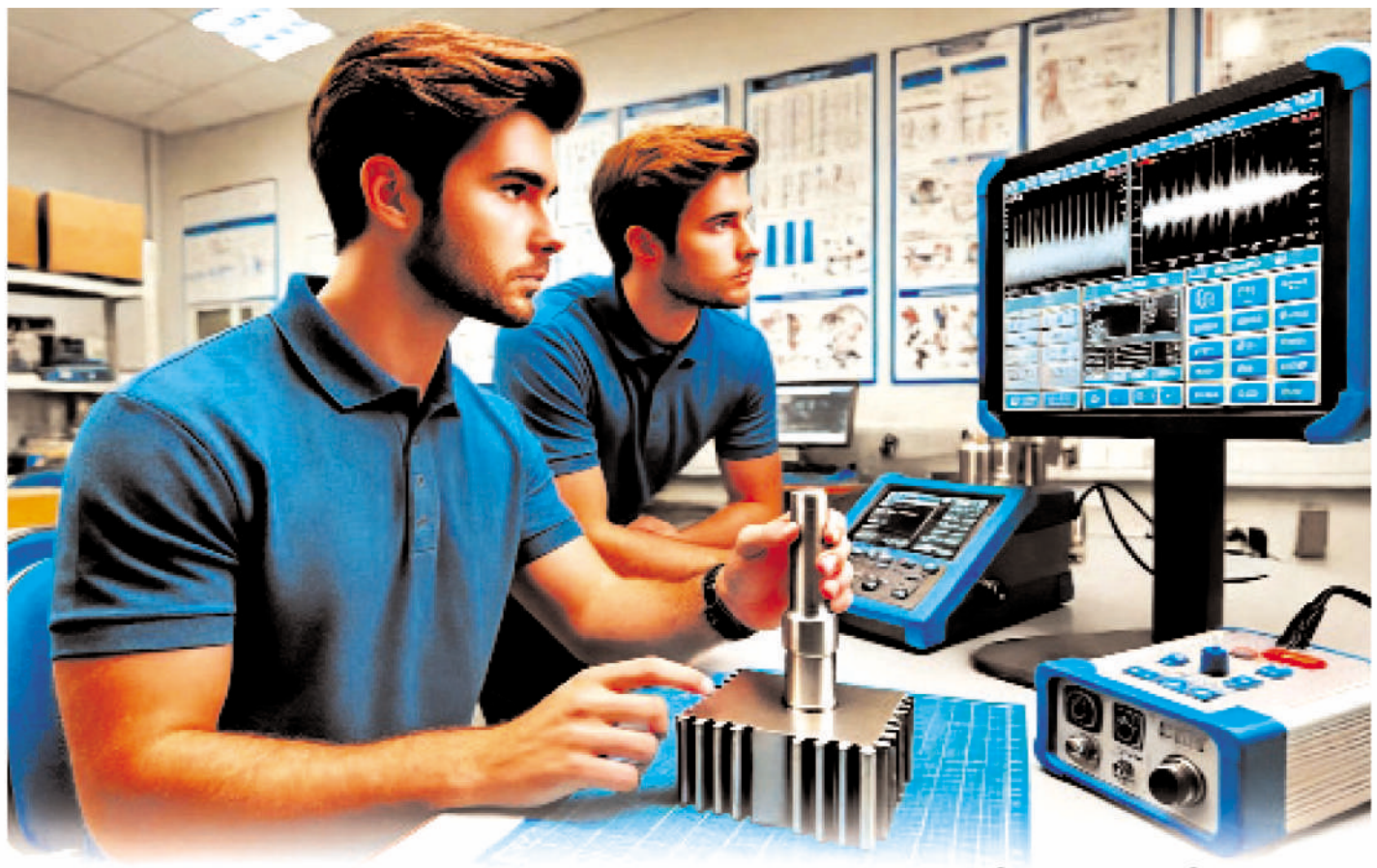

क्या है एनडीटी इंजीनियरिंग

बिना मशीन तोड़े ऐसे होती है जांच

एनडीटी इंजीनियरिंग भारत के लिए काफी नया है. लेकिन विदेशों में इसकी खूब डिमांड है. इसके तहत मशीनों की क्वालिटी और उनकी मजबूती देखी जाती है.

आज के समय में ट्रेडिशनल इंजीनियरिंग के अलावा भी कई तरह के ब्रांच हैं, जिनमें ग्रोथ और करियर स्कोप है. इन्हीं में से एक है NDT यानी Non-Destructive Testing Engineering. यह ऐसी टेक्निक है, जिसमें किसी मशीन, पाइपलाइन या टूल्स को बिना नुकसान पहुंचाए उसकी क्वालिटी और अंदरूनी खराबियों की जांच की जाती है.

क्या है एनडीटी इंजीनियरिंग

NDT (Non-Destructive Testing) एक टेस्टिंग टेक्निक है, जिसमें मशीन और टूल्स की मजबूती, दरार, जंग या अन्य अंदरूनी दिक्कतों की जांच की जाती है, लेकिन जांच के दौरान वस्तु को कोई नुकसान नहीं पहुंचता.

कैसे काम करती है ये टेक्नोलॉजी

एनडीटी में कई आधुनिक टेस्टिंग टेक्निक्स का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे:

- Ultrasonic Testing (UT)
- Radiographic Testing (RT)
- Magnetic Particle Testing (MT)
- Liquid Penetrant Testing (PT)
- Visual Testing (VT)

इन टेक्निक की मदद से मशीनों और धातु के पार्ट्स की क्वालिटी जांची जाती है.

किन सेक्टर्स में होती है सबसे ज्यादा डिमांड

एनडीटी प्रोफेशनल्स की मांग भारत और विदेश दोनों जगह तेजी से बढ़ रही है. इन सेक्टर में है डिमांड-

- ऑयल और गैस रिफाइनरी
- पाइपलाइन इंडस्ट्री
- थर्मल और न्यूक्लियर पावर प्लांट
- एयरोस्पेस सेक्टर
- ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री
- कंस्ट्रक्शन और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर

कौन कर सकता है यह कोर्स

- मैकेनिकल इंजीनियरिंग में BTech या Diploma
- BSc (Science) छात्र
- टेक्निकल बैकग्राउंड वाले उम्मीदवार

कहां से करें एनडीटी कोर्स

एनडीटी में मुख्य रूप से Level 1, Level 2 और Level 3 सर्टिफिकेशन होते हैं. भारत में कई संस्थान एनडीटी ट्रेनिंग और सर्टिफिकेशन कोर्स कराते हैं. इनमें प्रमुख हैं-
TRINITY NDT, Bengaluru
IMech Institute, Hyderabad
NITS (National Inspection & Testing Services)

करियर और सैलरी

मैकेनिकल इंजीनियरिंग के साथ एनडीटी सर्टिफिकेशन करने पर QA/QC (Quality Assurance & Quality Control) विभाग में नौकरी के बेहतर अवसर मिलते हैं. शुरुआती स्तर पर अच्छी सैलरी के साथ अनुभव बढ़ने पर लाखों रुपये प्रति माह तक कमाई की संभावना रहती है.

विदेशों में भी भारी डिमांड

एनडीटी इंजीनियरिंग की विदेशों में भी काफी मांग है. खासकर Gulf Countries, अमेरिका और यूरोप में ऑयल-गैस, एयरोस्पेस और पावर सेक्टर में ASNT/PCN Certified NDT Professionals को शानदार सैलरी पैकेज मिलते हैं.

बिना डॉक्टर बने मेडिकल फील्ड में

बनाएं शानदार करियर

डेटा और मेडिकल फील्ड में बनाएं शानदार करियर. जानिए पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा इन हेल्थकेयर एनालिटिक्स कोर्स क्या है. जानें इस कोर्स को करने के बाद क्या करियर स्कोप है. आज के समय में हेल्थकेयर सिर्फ डॉक्टरों और दवाइयों तक सीमित नहीं रह गया है. अब इसमें टेक्नोलॉजी और डेटा का यूज बहुत तेजी से बढ़ रहा है. हॉस्पिटल, रिसर्च लैब्स और फार्मा कंपनियां हर दिन मरीजों का भारी मात्रा में डेटा इकट्ठा करती हैं. इस डेटा को समझकर मरीजों के इलाज को बेहतर बनाना और अस्पतालों के काम को आसान करना ही हेल्थकेयर एनालिटिक्स कहलाता है. अगर आप मेडिकल, आईटी, या मैनेजमेंट फील्ड से हैं और इस उभरते हुए क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं, तो हेल्थकेयर एनालिटिक्स में पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा आपके लिए एक बेहतरीन कोर्स हो सकता है.

हेल्थकेयर एनालिटिक्स

यह एक साल का पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स होता है, जिसे खासतौर पर हेल्थकेयर और डेटा साइंस को मिलाकर तैयार किया गया है. इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य छात्रों को मेडिकल क्षेत्र से जुड़े डेटा (जैसे मरीजों का रिकॉर्ड, बीमारियों के आंकड़े, और अस्पताल का खर्च) का एनालिसिस कैसे किया जाए. इस कोर्स को करने के बाद आप डेटा की मदद से डॉक्टरों और अस्पतालों को यह बताने में मदद करते हैं कि किस बीमारी का इलाज कैसे बेहतर हो सकता है और हॉस्पिटल का मैनेजमेंट कैसे सुधारा जा सकता है.

कौन कर सकता है यह कोर्स

इस कोर्स की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें अलग-अलग बैकग्राउंड के छात्र आ सकते हैं. अगर आपने नीचे दी गई किसी भी स्ट्रीम में ग्रेजुएशन पूरी की है, तो आप इसके लिए योग्य हैं:

लाइफ साइंसेज और मेडिकल: MBBS, BDS, BPharma, नर्सिंग, या BSc (बायो/लाइफ साइंसेज) के छात्र.

टेक्नोलॉजी और मैथ्स: BTech, BCA, BSc (कंप्यूटर साइंस, स्टैटिस्टिक्स, या मैथ्स) के छात्र.

मैनेजमेंट: BBA या हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट के छात्र जिन्हें डेटा में रुचि हो. आमतौर पर इस कोर्स में एडमिशन के लिए ग्रेजुएशन में कम से कम 50% मार्क्स होना जरूरी होता है. कई इंस्टीट्यूट इसके लिए सीधा एडमिशन देते हैं, तो कुछ इंटरव्यू के आधार पर चुनते हैं.

सैलरी और फ्यूचर स्कोप

शुरुआती तौर पर इस कोर्स को पूरा करने के बाद एक फ्रेशर को सालाना 4 लाख से 7 लाख रुपये तक का पैकेज आसानी से मिल जाता है. जैसे-जैसे आपका अनुभव और डेटा टूल्स पर आपकी पकड़ बढ़ती है, यह सैलरी सालाना 12 से 15 लाख रुपये या उससे भी ज्यादा हो सकती है.

करियर के मौके: कहां मिलेगी नौकरी

हेल्थकेयर एनालिटिक्स का मार्केट बहुत तेजी से बढ़ रहा है, इसलिए इस कोर्स को करने के बाद नौकरियों की कोई कमी नहीं है.

बड़े कॉर्पोरेट अस्पताल: अपोलो, फोर्टिस, मैक्स जैसे हॉस्पिटल्स में यहां आप मरीजों के डेटा और अस्पताल के ऑपरेशन को बेहतर बनाने का काम करते हैं.

फार्मास्युटिकल और ड्रग कंपनियां: दवाओं के असर और उनके क्लिनिकल ट्रायल के डेटा को एनालाइज करने के लिए.

हेल्थ इंश्योरेंस कंपनियां: क्लेम के डेटा को समझने और फ्रॉड (धोखाधड़ी) को रोकने के लिए एनालिस्ट की जरूरत होती है.

आईटी और टेक कंपनियां: TCS, Cognizant, Accenture जैसे हेल्थ सेक्टर के लिए सॉफ्टवेयर और ऐप्स बनाती हैं.

राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार से लेकर दक्षिण के कई राज्यों की ऐतिहासिक इमारतें और धरोहरें हमेशा से घरेलू व विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर खींचती रही हैं।ऐसे में इन धरोहरों को सहेजना, उनका संरक्षण करना जरूरी हो जाता है। यही जिम्मेदारी संभालते हैं कंजर्वेशन मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट, जो स्मारकों, किलों, महलों, मंदिरों के अलावा बेशकीमती पांडुलिपियों, मूर्तियों, सिक्कों या वॉल पेंटिंग्स जैसे म्यूजियम ऑब्जेक्ट्स को सहेजकर रखते हैं।

हेरिटेज मैनेजमेंट का कोर्स कर संवारें करियर

भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विविधता बेमिसाल मानी जाती है। राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार से लेकर दक्षिण के कई राज्यों की ऐतिहासिक इमारतें और धरोहरें हमेशा से घरेलू व विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर खींचती रही हैं। अगर आपको भी ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण में दिलचस्पी है, तो म्यूजियोलॉजी या हेरिटेज मैनेजमेंट का कोर्स करने के बाद इस उभरते हुए क्षेत्र में करियर संवार सकते हैं।

जॉब स्कॉप

यूनेस्को की ओर से देश की 32 धरोहरों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स का दर्जा मिला हुआ है। ये सभी देश के कल्चरल टूरिज्म के बड़े गंतव्य हैं लेकिन बेतरतीब शहरीकरण व व्यवसायीकरण से इन धरोहरों के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। इनके रखरखाव की जरूरत महसूस की जाने लगी है, जो सिर्फ प्रशिक्षित और हुनरमंद हेरिटेज कंजर्वेटर ही कर सकते हैं। यही कारण है कि हाल के वर्षों में हेरिटेज कंजर्वेटर, आर्ट रिस्टोरर और म्यूजियोलॉजिस्ट जैसे पेशे का महत्व काफी बढ़ गया है। संग्रहालयों का भी सामाजिक और शैक्षणिक महत्व दिनो-दिन बढ़ता जा रहा है। देश में आर्ट म्यूजियम, आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम, वैक्स म्यूजियम, विज्ञान/ तकनीक/ मैरिटाइम म्यूजियम तथा मिलेट्री व वॉर म्यूजियम के रूप में कई तरह के म्यूजियम्स संचालित हो रहे हैं, जिनमें हेरिटेज एक्सपर्ट्स की अच्छी डिमांड है।

करियर के अवसर

भारत में हेरिटेज मैनेजमेंट सेक्टर भले ही अभी नया है लेकिन इसमें जॉब के अवसर कम नहीं हैं। म्यूजियोलॉजी और हेरिटेज मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स के लिए टीचिंग और रिसर्च वर्क के अलावा नेशनल/ स्टेट म्यूजियम्स, आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम्स, आर्ट गैलरीज, कंजर्वेशन लैब्स, लाइब्रेरी, आर्काइव्स, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, स्टेट डिपार्टमेंट ऑफ आर्कियोलॉजी, पर्यटन विभाग तथा एनजीओ में जॉब के ढेर सारे मौके हैं। ऐसे जानकारों की सेवाएं विदेश मंत्रालय की हिस्टोरियन डिविजन, शिक्षा मंत्रालय, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च आदि में भी ली जाती हैं। यूनेस्को और यूनिसेफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भी जॉब की अच्छी संभावनाएं हैं। म्यूजियोलॉजी या हेरिटेज मैनेजमेंट के विद्यार्थी वर्तमान में बड़ी संख्या में इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट एंड कल्चर, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट, कल्चर एंड हेरिटेज तथा म्यूजियम्स में कंजर्वेटर, हेरिटेज मैनेजर, क्यूरेटर, प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर, रिसर्च एसोसिएट या आर्ट कंसल्टेंट जैसे पदों पर सेवाएं दे रहे हैं।

वर्क प्रोफाइल

म्यूजियोलॉजी यानी म्यूजियम से जुड़ा विज्ञान। इस कोर्स के अंतर्गत मुख्य रूप से म्यूजियम के प्रशासन तथा मैनेजमेंट से जुड़े पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। पाठ्यक्रम के रूप में संग्रहालय विस्थापन, वैज्ञानिक/ कलात्मक/ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तुओं की देखभाल/ संरक्षण, कलाओं का प्रस्तुतिकरण, म्यूजियम कलेक्शन, डिजाइनिंग तथा डॉक्यूमेंटेशन आदि विषयों की जानकारी दी जाती है, जबकि हेरिटेज कंजर्वेशन एंड मैनेजमेंट कोर्स एक इंटर-डिसिप्लिनरी स्पेशलाइज्ड कोर्स है। इसके अध्ययन का दायरा दो हिस्सों में बंटा है- हेरिटेज कंजर्वेशन तथा हेरिटेज मैनेजमेंट। हेरिटेज कंजर्वेशन एक टेक्निकल फील्ड है। इसके अंतर्गत विभिन्न स्थलों की खुदाई में मिले म्यूजियम ऑब्जेक्ट्स यानी दुर्लभ पांडुलिपियों, मूर्तियों, पुराने सिक्कों या प्राचीन कलाकृतियों को नष्ट होने से बचाने की जानकारी दी जाती है। वहीं, हेरिटेज मैनेजमेंट पूरी तरह से एडमिनिस्ट्रेटिव व आर्किटेक्चरल फील्ड है, जिसमें स्मारकों के प्रबंधन, रखरखाव व साजसज्जा की जानकारी दी जाती है।

पर्सनल स्किल

हेरिटेज कंजर्वेशन बिल्कुल अलग तरह का कोर्स है। इसलिए इस क्षेत्र में वे ही युवा आएं, जिन्हें इतिहास, कला या सांस्कृतिक चीजों में रुचि हो क्योंकि बगैर रुचि और समर्पण के इस क्षेत्र में तरक्की कर पाना मुश्किल है। यदि प्रबंधन क्षेत्र से जुड़ना चाहते हैं, तो आर्किटेक्चरल स्किल, टेक्निकल स्किल के अलावा आपमें प्रशासनिक क्षमता, अच्छी ऑबजर्वेशन स्किल और विश्लेषण की दक्षता भी होनी चाहिए।

स्पेन पहुंचे हजारों प्रवासी क्यों लौटे मोरक्को?

एजेंसी, स्यूटा।

स्पेन के स्वायत्त इलाके स्यूटा में घुसे हजारों प्रवासी शुक्रवार को अपनी इच्छा से मोरक्को लौटने लगे। यह घटना बड़े पैमाने पर सीमा पार करने के एक दिन बाद हुई, जिसमें अफरातफरी मच गई थी और कम से कम 57 लोगों की मौत हो गई थी। स्पेनिश अधिकारियों ने बताया कि जमीन और समुद्र के रास्ते आए 50 हजार से ज्यादा प्रवासियों में से ज्यादातर लोग अब खुद ही वापस लौट रहे हैं।

स्यूटा पहुंचने के लिए कुछ प्रवासी कई किलोमीटर तक तैरकर आए, जबकि कुछ को रोकने के लिए सुरक्षाबलों ने पानी की बौछार, आंसू गैस और चेतावनी के लिए गोलियां चलाईं। मरने वालों में कुछ लोग डूब गए, जबकि कुछ की मौत भगदड़ में हुई।

प्रवासी अब वापस क्यों लौट रहे हैं?

समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार, मोरक्को के सुरक्षा बलों ने स्यूटा में प्रवेश के रास्तों पर जमा भीड़ को रोकने के लिए डंडों और आंसू गैस का इस्तेमाल किया, ताकि और लोग मोरक्को के भूमध्यसागरीय तट पर स्थित इस छोटे से स्पेनिश इलाके में प्रवेश न कर सकें। स्पेन की ओर सीमा के कुछ हिस्सों में सैन्य वाहन तैनात किए गए थे। वहीं, मोरक्को की तरफ एक पहाड़ी पर कई प्रवासी अब भी मौजूद थे। वे दूर से यह सब देख रहे थे, क्योंकि वे सीमा पार नहीं कर पाए थे।

'न खाना मिला, न रहने की जगह'

सैकड़ों प्रवासियों को आधिकारिक सीमा रास्तों और बाड़ में बने रास्तों से मोरक्को लौटते हुए देखा गया। कई लोगों ने बताया कि स्यूटा पहुंचने के बाद उन्हें न खाना मिल पाया और न ही रहने की जगह। उत्तर पश्चिम मोरक्कों के बंदरगाह शहर टैंजियर के रहने वाले एक युवा ने समाचार एजेंसी से कहा, सच कहूं तो मुझे भी नहीं पता कि मैं यहां क्यों आया था और अब मैं वापस जा रहा हूं। मैंने कल दोपहर के भोजन के बाद से कुछ नहीं खाया है। हालांकि मेरे पास कुछ पैसे थे। हम जो कर रहे हैं, वह न तो अच्छा है और न ही खुशी देने वाला।

'गाली नहीं, गोली का जवाब दो'

आइसा अध्यक्ष बोलीं- भाषा को मुद्दा बना पैलेट गन के सवालों से क्यों बच रही सरकार?

एजेंसी, नई दिल्ली

20 जुलाई को संसद मार्च के दौरान सीजेपी प्रदर्शनकारियों पर हुई कथित पुलिस कार्रवाई और पेलेट गन के इस्तेमाल को लेकर विवाद तेज हो गया है। इस बीच वामपंथी छात्र संगठन आइसा की अध्यक्ष नेहा ने आंदोलन के दौरान कुछ प्रदर्शनकारियों द्वारा इस्तेमाल की गई आपत्तिजनक भाषा पर माफी मांगने या उसकी निंदा करने से साफ इनकार कर दिया। जंतर-मंतर पर 23 दिनों तक भूख हड़ताल करने वाली नेहा का आरोप है कि भाषा के विवाद को जानबूझकर उछालकर पुलिस कार्रवाई की जवाबदेही, प्रदर्शनकारियों पर हुए बल प्रयोग और उससे जुड़े गंभीर सवालों से लोगों का ध्यान भटकाया जा रहा है।

क्या भाषा का विवाद असली मुद्दे से ध्यान भटकाने की कोशिश है?

पीटीआई को दिए एक साक्षात्कार में नेहा ने कहा कि कुछ प्रदर्शनकारियों की भाषा को लेकर पैदा किया गया

विवाद पुलिस कार्रवाई की जवाबदेही से बचने का माध्यम बन गया है। आंदोलन के दौरान कुछ लोगों द्वारा इस्तेमाल की गई अभद्र भाषा को लेकर राजनीतिक विवाद खड़ा किया गया है। जबकि प्रदर्शन समाप्त होने के बाद कई लोगों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई भी की जा रही है।

रुचिका सिंह पर एफआईआर को लेकर नेहा ने क्या कहा?

इस मामले में सबसे अधिक चर्चा 15 वर्षीय प्रदर्शनकारी रुचिका सिंह की हुई, जिन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करते हुए आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया था। उनके खिलाफ कई एफआईआर दर्ज की गई हैं। नेहा ने इसे 'चुनिंदा आक्रोश'करार देते हुए कहा कि केवल एक पक्ष की भाषा पर कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने अपना पक्ष रखते हुए कहा,'आपको हमारी भाषा इतनी आपत्तिजनक लगती है। लेकिन जब धर्मेंद्र प्रधान ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे छात्रों को 'आतंकवादी' कहा था, तब क्या वह आपको आपत्तिजनक नहीं लगा? क्या उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई? जब नितिन नवीन ने हमें 'वायरस' कहा, तब किसी ने कार्रवाई की मांग क्यों नहीं की?'नेहा ने आगे कहा कि चर्चा प्रदर्शनकारियों की भाषा पर नहीं, बल्कि उनके साथ हुई कथित हिंसा पर होनी चाहिए।

20 जुलाई को प्रदर्शनकारियों पर पेलेट गन क्यों चलाई गई?

पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठाते हुए उन्होंने नेहा ने कहा कि सबसे पहले मैं उन लोगों से कहना चाहती हूं जो हमसे इस भाषा की निंदा करने को कहते हैं कि हम आपका यह खेल नहीं खेलेंगे। आप इसलिए यह मुद्दा उठा रहे हैं क्योंकि हम अमित शाह और पुलिस आयुक्त से जवाब मांग रहे हैं। आपको लगता है कि छात्रों पर पेलेट गन चलाना छोटा मुद्दा है और रुचिका का बयान बड़ा मुद्दा है। हम आज भी जवाब चाहते हैं कि 20 जुलाई को प्रदर्शनकारियों पर पेलेट गन क्यों चलाई गई? सुरक्षा बलों को पेलेट गन क्यों दी गई? जिन डंडों से प्रदर्शनकारियों को मारा गया, उन पर कीलें क्यों लगी थीं?

क्या नेताओं की टिप्पणी पर भी समान कार्रवाई हुई?

नेहा ने आरोप लगाया कि आंदोलनकारियों के खिलाफ नेताओं द्वारा दिए गए कथित अपमानजनक बयानों पर वैसी प्रतिक्रिया नहीं हुई जैसी प्रदर्शनकारियों की भाषा पर देखने को मिली। जब संसद के भीतर आपके लोग हमारे खिलाफ अपमानजनक भाषा बोलते हैं और जब RSS के एक विचारक कहते हैं कि 'जंतर-मंतर पर दुष्कर्म पसंद करने वाली महिलाएं प्रदर्शन कर रही थीं', तब वह आपको अशोभनीय नहीं लगता?

क्या प्रदर्शनकारी महिलाओं को अलग तरह से निशाना बनाया जा रहा है?

नेहा ने आरोप लगाया कि उन्हें और रुचिका सिंह को सोशल मीडिया पर कई दुष्कर्म की धमकियां मिलीं। यह दमन लैंगिक स्वरूप का है। रुचिका के खिलाफ छह एफआईआर दर्ज की गई हैं और उन्हें दुष्कर्म की धमकियां मिल रही हैं। यह महिला प्रदर्शनकारियों को अलग तरीके से निशाना बनाने का उदाहरण है।' नेहा का दावा है कि आंदोलन को कमजोर करने के लिए प्रदर्शनकारियों के बीच जाति, धर्म और लिंग के आधार पर विभाजन पैदा करने की कोशिश की जा रही है।

क्या आंदोलन हर प्रदर्शनकारी की भाषा का समर्थन करता है?

नेहा ने स्पष्ट किया कि आंदोलन किसी भी प्रदर्शनकारी द्वारा बोले गए हर शब्द का समर्थन नहीं करता, लेकिन पूरे आंदोलन को केवल भाषा के विवाद तक सीमित कर देना उचित नहीं है। देश के सामने असली सवाल यह नहीं है कि किसी ने कोई अपशब्द कहा या नहीं। असली सवाल यह है कि क्या शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे आम नागरिकों पर पेलेट गन और आंसू गैस का इस्तेमाल किया जा सकता है? लोगों को इसी बात से विचलित होना चाहिए।

20 जुलाई की कार्रवाई को लेकर दोनों पक्ष क्या कह रहे हैं?

पेपर लीक विरोधी आंदोलन से जुड़े प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि 20 जुलाई को संसद मार्च के दौरान दिल्ली पुलिस ने अत्यधिक बल प्रयोग किया, जिसमें पेलेट गन और अन्य बल प्रयोग शामिल थे। हालांकि, दिल्ली पुलिस ने इन आरोपों से इनकार किया है। वहीं केंद्र सरकार का कहना है कि सुरक्षा बलों ने कानून के दायरे में रहकर कार्रवाई की।

रुचिका सिंह के खिलाफ क्या कानूनी कार्रवाई हुई है?

इस सप्ताह रुचिका सिंह के खिलाफ कई एफआईआर दर्ज की गई हैं। इनमें नोएडा में दर्ज एक जीरो एफआईआर भी शामिल है, जिसे आगे की जांच के लिए दिल्ली पुलिस को स्थानांतरित कर दिया गया है। इन मामलों में भारतीय न्याय संहिता की उन धाराओं के तहत केस दर्ज किए गए हैं, जो जानबूझकर अपमान करने, लोक शांति भंग करने वाले बयान देने और मानहानि से संबंधित हैं।

अभिजीत दीपके की फिर बिगड़ी तबीयत

पुणे। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके की शनिवार को अचानक तबीयत खराब हो गई। डॉक्टर ने जांच के बाद उन्हें पूरे दिन आराम करने की सलाह दी है। जानकारी के मुताबिक, शनिवार सुबह दीपके अपने घर के पार्किंग एरिया में लोगों से मिलने आए थे। इसी दौरान करीब 11:45 बजे उन्हें अचानक बेचैनी महसूस हुई। इसके बाद वह घर के पीछे की ओर गए, जहां उन्हें उल्टी हुई। इसके बाद वह बिना मीडिया से बात किए सीधे अपने घर के अंदर चले गए।

उनके पिता भगवान दीपके ने बताया कि उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद डॉक्टर को घर बुलाया गया। डॉक्टर विशाल लहाने ने मौके पर पहुंचकर उनकी जांच की। डॉक्टर ने बताया कि दीपके का ब्लड प्रेशर थोड़ा कम है। सुबह से उन्हें घबराहट और उल्टी जैसा महसूस हो रहा था। उन्हें दो बार उल्टी हुई है और साथ ही दस्त (लूज मोशन) की भी शिकायत है। डॉक्टर के अनुसार, यह परेशानी तनाव और चिंता की वजह से हो सकती है।

क्या ईरान पर नहीं रुकेंगे अमेरिकी हमले? व्हाइट हाउस ने दिया जवाब; ट्रंप बोले- अब भरोसा खत्म हो रहा

एजेंसी, वॉशिंगटन।

पश्चिम एशिया में अमेरिका और ईरान के बीच छिड़े संघर्ष के खत्म होने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। इस बीच व्हाइट हाउस ने संकेत दिए हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ईरान पर नए सैन्य हमलों पर विचार कर रहे हैं। अमेरिका चाहता है कि ईरान होर्मुज जलडमरूमध्य को दोबारा खोले और पिछले महीने दोनों देशों के बीच हुए संघर्षविराम समझौते की शर्तों का पालन करे। हालांकि, अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि यह समझौता जल्द ही टूट गया। अमेरिका ने शुक्रवार रात ईरान पर कोई हमला नहीं किया। वहीं, ईरान के अर्धसैनिक संगठन रिवोल्यूशनरी गार्ड ने दावा किया कि उसने होर्मुज जलडमरूमध्य में दो और टैंकरों को निशाना बनाया है। उधर, कुवैत ने कहा कि उसने ईरान के ड्रोन हमले को नाकाम कर दिया।

व्हाइट हाउस बोला- ईरान को कीमत चुकानी होगी

व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा कि ईरान ने पिछले महीने अमेरिका के साथ संघर्षविराम को लेकर एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन बाद में उसने इसे तोड़ दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि ईरान ने व्यावसायिक जहाजों पर हमला किया और अमेरिकी सैनिकों की जान ली। लेविट ने शुक्रवार शाम जारी बयान में कहा, "राष्ट्रपति ट्रंप इस तरह के आतंकवादी व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करेंगे। जब तक ईरान राष्ट्रपति ट्रंप की नजर में सार्थक तरीके से बातचीत की मेज पर नहीं आता, तब तक उसे इसकी कीमत चुकानी होगी।" इससे पहले शुक्रवार को मैरीलैंड स्थित कैंप डेविड में कैबिनेट सदस्यों के साथ बैठक के दौरान ट्रंप ने कहा कि अमेरिका ईरान के खिलाफ अपना अभियान जारी रखेगा। उन्होंने कहा, "हम बस जीतना चाहते हैं।" ट्रंप ने कहा, "हम उन पर बहुत कड़ा प्रहार करेंगे। एक समय ऐसा आएगा जब वे कहेंगे कि अब हम और बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

ट्रंप बोले- ईरान पर भरोसा खो रहा हूं

कैंप डेविड में कैबिनेट बैठक के दौरान डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उनका ईरान पर से भरोसा उठता जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि तेहरान बार-बार अपने वादों से मुकर जाता है, जबकि दोनों देशों के बीच बातचीत जारी है। ट्रंप ने कहा, "वे झूठ बोलते हैं और तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं। वे हमेशा बातचीत करना चाहते हैं, लेकिन बार-बार अपना वादा तोड़ देते हैं।" कड़ी टिप्पणी के बावजूद ट्रंप ने कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच शीर्ष स्तर पर बातचीत जारी है। उन्होंने बताया कि विशेष दूत स्टीव विटकॉफ, वरिष्ठ सलाहकार जेरेड कुशनर, उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और विदेश मंत्री मार्को रूबियो वार्ता टीम के प्रमुख सदस्य हैं। उन्होंने कहा, "हमारे बहुत अच्छे लोग बातचीत कर रहे हैं।"

'दूसरों की भी मां होती है'

मुंबई। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे ने शनिवार को कहा कि हाल के जंतर-मंतर प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ इस्तेमाल की गई भाषा अपमानजनक थी। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री को अपनी पार्टी के नेताओं और समर्थकों को भी ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल करने से रोकने की सलाह देनी चाहिए। राज ठाकरे मुंबई में महाराष्ट्र नवनिर्माण विद्यार्थी सेना (एमएनवीएस) के 20वें स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति के खिलाफ आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यही नियम सभी राजनीतिक दलों पर समान रूप से लागू होना चाहिए।

ठाकरे ने कहा, जंतर-मंतर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया गया, वह गलत था। हम इससे सहमत हैं। मैं 100 फीसदी मानता हूं कि किसी के खिलाफ इस तरह की घटिया भाषा का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। मैं प्रधानमंत्री से सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि अपनी पार्टी के लोगों को भी यह बात समझाएं।

कुलगाम आतंकी हमला

मल्लिकार्जुन खरगे का दावा- पहचान पूछने के बाद मजदूरों को मारी गई गोली

एजेंसी, नई दिल्ली

कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में छत्तीसगढ़ के दो मजदूरों की हत्या की कड़ी निंदा की। उन्होंने आरोप लगाया कि आतंकियों ने दोनों मजदूरों की पहचान करने के बाद उन्हें निशाना बनाया।

मल्लिकार्जुन खरगे ने एक्स पर लिखा कि जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में हुआ कायराना आतंकी हमला अत्यंत निंदनीय और मानवता को शर्मसार करने वाला है। दो निर्दोष मजदूरों की पहचान पूछकर उनकी निर्मम हत्या करना आतंक की क्रूर मानसिकता का घिनौना उदाहरण है। इसकी जितनी भी निंदा की जाए, कम है। शोकाकुल परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाए हैं। दोषियों के विरुद्ध त्वरित और कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करते हुए उन्हें कानून के अनुसार सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए।

आतंकवाद के खिलाफ देश हमेशा एकजुट- राहुल गांधी

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने हमले को लेकर कहा, जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में हुए दुस्साहसी आतंकी हमले में देश के दो श्रमिकों की हत्या अत्यंत दुखद है। शोकाकुल परिवारों को अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। आतंकियों के ऊपर इस कायराना हमले के लिए सख्त कार्रवाई हो और उन्हें कड़ी से कड़ी सजा मिले। आतंकवाद के खिलाफ देश हमेशा एकजुट है।

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने पोस्ट में लिखा, कुलगाम में हुआ कायराना आतंकी हमला अत्यंत शर्मनाक और निंदनीय है। ईंट-भट्टे पर काम करने वाले दो मजदूरों की पहचान पूछकर हत्या करना बेहद घृणित और मानवता विरोधी कृत्य है। इसकी जितनी भी निंदा की जाए, कम है। पूरे देश की संवेदनाएं पीड़ित परिवारों के साथ हैं। मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए आतंकियों को सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए।"

10-10 लाख के मुआवजे का एलान

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कुलगाम के देवसर इलाके में दो बाहरी मजदूरों की बर्बर हत्या की कड़ी निंदा की है। इसके साथ ही कहा, "हम पीड़ित परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि उन्हें इस अपूरणीय क्षति को सहने की शक्ति और साहस मिले। कमजोर लोगों को निशाना बनाना पूरी तरह से अमानवीय कृत्य है जिसकी कड़ी से कड़ी निंदा की जानी चाहिए।"

मुख्यमंत्री ने मारे गए लोगों के परिवारों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 10-10 लाख मुआवजा राशि देने की घोषणा की। यह राशि जिला प्रशासन की ओर से दी जाने वाली 6-6 लाख की तत्काल सहायता के अलावा होगी। मुख्यमंत्री ने पीड़ित परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की और भरोसा दिलाया कि सरकार इस मुश्किल समय में उनके साथ मजबूती से खड़ी है।

क्या है मामला?

कुलगाम जिले के केलम गांव में शुक्रवार को हुए आतंकवादी हमले में गोली लगने से दो मजदूरों की मौत हो गई है। अधिकारियों ने बताया कि छत्तीसगढ़ के एक और घायल मजदूर ने सुबह श्रीनगर के एक अस्पताल में दम तोड़ दिया। मृतकों की पहचान दीपक रैट्रे (24) और बोपिंदर (28) के तौर पर हुई है। दोनों छत्तीसगढ़ के रहने वाले थे और कुलगाम जिले के केलम गांव में एक ईंट भट्टे पर मजदूरी का काम करते थे।

सम्पादकीय

नेपाल में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा

नेपाल फिलहाल हिंसा की आग को बुझाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वास्तविक चुनौती केवल कर्फ्यू हटाने की नहीं, बल्कि टूटते सामाजिक विश्वास को फिर से जोड़ने की है। यदि राजनीतिक नेतृत्व, प्रशासन और समाज मिलकर समय रहते इस संकट का स्थायी समाधान नहीं खोजते, तो यह घटना भविष्य में और बड़े सामाजिक टकरावों की चेतावनी साबित हो सकती है। नेपाल की शांति केवल नेपाल का विषय नहीं है, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया, विशेषकर भारत की सुरक्षा और स्थिरता से भी गहराई से जुड़ी हुई है। नेपाल की 2021 की जनगणना के अनुसार मुस्लिम आबादी राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 5 प्रतिशत है, लेकिन मधेश और तराई के कई सीमावर्ती जिलों में उनकी हिस्सेदारी राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। सुनसरी, धनुषा, रौतहट, पर्सा और सराही जैसे जिले भारत की खुली सीमा से जुड़े हैं, जहां वर्षों पुराने पारिवारिक, वैवाहिक और व्यापारिक रिश्ते बिहार तथा उत्तर प्रदेश से जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि सीमा के दोनों ओर पैदा होने वाले सामाजिक या सांप्रदायिक तनाव एक-दूसरे को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। भारत के लिए चुनौती केवल सीमा सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि अफवाहों, कट्टरपंथी प्रचार, संगठित उकसावे और सोशल मीडिया के माध्यम से फैलने वाले दुष्प्रचार पर भी समान रूप से नजर रखना आवश्यक होगा। भारत के लिए यह घटनाक्रम विशेष महत्व रखता है क्योंकि हिंसा प्रभावित अधिकांश जिले भारतीय सीमा से लगे हुए हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश से सटी खुली भारत-नेपाल सीमा दोनों देशों की सबसे बड़ी ताकत भी है और संवेदनशीलता भी। यदि नेपाल में सांप्रदायिक तनाव लंबे समय तक बना रहता है तो उसका असर सीमा पार सामाजिक संबंधों, व्यापार, सुरक्षा और खुफिया चुनौतियों पर भी पड़ सकता है। भारत को नेपाल के साथ सुरक्षा समन्वय, सीमा पर सतर्क निगरानी, अफवाहों और कट्टरपंथी प्रचार पर नजर तथा स्थानीय प्रशासन के बीच बेहतर सूचना साझाकरण को और मजबूत करना होगा। दरअसल, नेपाल की तराई पहली बार बड़े पैमाने पर हिंसा का गवाह नहीं बनी है। वर्ष 2007 का गौर नरसंहार, कपिलवस्तु की जातीय हिंसा और 2015 की टीकापुर घटना इस क्षेत्र की संवेदनशील सामाजिक संरचना की याद दिलाती हैं। इन घटनाओं का स्वरूप धार्मिक नहीं था, बल्कि जातीय और राजनीतिक संघर्षों से जुड़ा था। लेकिन इन सभी घटनाओं में एक समानता स्पष्ट दिखती है कि बड़ी भीड़ रही, प्रशासन की देर से प्रतिक्रिया आई और स्थानीय तनाव ने तेजी से हिंसक रूप ले लिया। यही कारण है कि आज धार्मिक विवाद भी

प्रभात कुमार
सम्पादक

उसी संवेदनशील सामाजिक ढांचे में और अधिक विस्फोटक साबित हो रहे हैं। इसी संदर्भ में नेपाल में बढ़ते धार्मिक ध्रुवीकरण पर भी बहस तेज हो गई है। कुछ राजनीतिक समूह नेपाल की बदलती जनसांख्यिकीय और धार्मिक राजनीति को लेकर चिंता जता रहे हैं तथा इसे बढ़ते इस्लामी प्रभाव या पहचान-आधारित राजनीति से जोड़ रहे हैं, जबकि अन्य विशेषज्ञ इसे सामाजिक अविश्वास, आर्थिक निराशा तथा राजनीतिक ध्रुवीकरण का संयुक्त परिणाम मानते हैं। देखा जाये तो नेपाल इस समय धार्मिक पहचान की राजनीति के बढ़ते प्रभाव का सामना कर रहा है, जिससे सभी समुदायों के बीच तनाव बढ़ने का जोखिम पैदा हुआ है। नेपाल के जिस कप्तानगंज इलाके से इस हिंसा की शुरुआत हुई, वह भारत के बिहार से लगी खुली सीमा के बेहद करीब स्थित है। यह क्षेत्र सुनसरी जिले की देवानगंज ग्रामीण पालिका के अंतर्गत आता है, जहां हिंदू और मुस्लिम समुदाय दशकों से एक-दूसरे के पड़ोसी के रूप में रहते आए हैं। स्थानीय बाजार, स्कूल और सामाजिक जीवन दोनों समुदायों के बीच साझा रहे हैं। यही नजदीकी सामान्य दिनों में सामाजिक सौहार्द का प्रतीक बनती है, लेकिन तनाव की स्थिति में यही भौगोलिक निकटता छोटी-सी कहासुनी को भी कुछ ही घंटों में बड़े सांप्रदायिक टकराव में बदल देने का खतरा पैदा कर देती है। नेपाल की तराई इस समय किसी शांत पहाड़ी देश की तस्वीर नहीं, बल्कि ऐसी बारूद की ढेरी नजर आ रही है, जहां एक मामूली चिंगारी ने पूरे इलाके को अपनी चपेट में ले लिया। कांवड़ यात्रा की तैयारियों के दौरान डीजे की तेज आवाज को लेकर शुरू हुआ विवाद देखते ही देखते हिंसक झड़पों में बदल गया। पत्थर चले, पुलिस ने लाठीचार्ज किया, आंसू गैस छोड़ी, चेतावनी के तौर पर फायरिंग हुई और आखिरकार गोलियां चलीं। तीन लोगों की मौत ने इस विवाद को स्थानीय घटना से उठाकर राष्ट्रीय संकट का रूप दे दिया।

ईरानी विदेश मंत्री ने यूके को दी नसीहत

'अमेरिका की सैन्य मदद न करें आप'

एजेंसी, तेहरान।

ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने ब्रिटेन को चेतावनी भरे अंदाज में नसीहत दी है कि वह ईरान पर हमले करने में अमेरिका के साथ किसी भी तरह का सैन्य सहयोग न करे। शनिवार को ईरानी विदेश मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, अराघची ने ब्रिटिश विदेश सचिव एड मिलिबैंड के साथ फोन पर बातचीत के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि "आक्रामक देशों" के साथ कोई भी सहयोग, जिसमें मौजूदा रक्षा समझौतों के तहत किया गया सहयोग भी शामिल है "स्वीकार्य नहीं" होगा। अराघची ने ईरान के प्रति ब्रिटिश सरकार की "अनुचित और गलत" नीतियों की आलोचना की। उन्होंने लंदन द्वारा ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशन गार्ड कॉर्प्स

(आईआरजीसी) को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताने और हाल के महीनों में अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान के खिलाफ थोपे गए दो संघर्षों में उसकी "मिलीभगत" का हवाला दिया। उन्होंने ब्रिटेन से तेहरान के प्रति अपने रुख पर पुनर्विचार करने को कहा। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय कानून और 'आक्रामक परिभाषा के लिए कन्वेंशन' के तहत, किसी देश के क्षेत्र और सुविधाओं का इस्तेमाल किसी दूसरे देश के खिलाफ गैर-कानूनी हमलों के लिए करने की अनुमति देना आक्रामकता है और इससे हमले का शिकार हुए देश को आत्मरक्षा का अधिकार मिलता है।

सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, अराघची ने कहा कि ईरान ने अच्छी नीयत से अमेरिका के साथ राजनयिक प्रक्रिया शुरू की थी और जून में वाशिंगटन के साथ संघर्ष को खत्म करने के उद्देश्य से एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन वाशिंगटन अपने वादों को पूरा करने में विफल रहा। उन्होंने होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की आवाजाही को मैनेज करने के लिए ओमान संग परिचालन तंत्र स्थापित करने के ईरान के प्रयासों पर भी प्रकाश डाला और चेतावनी दी कि किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप से मामला और अधिक जटिल हो जाएगा।

वहीं, मिलिबैंड ने कहा कि उनका देश ईरान के खिलाफ युद्ध में शामिल नहीं है और इस बात पर जोर दिया कि विवादों को सुलझाने का तरीका कूटनीति ही है। पिछले महीने, ब्रिटिश प्रधानमंत्री एंडी बर्नहैम ने ईरान से संबंधित अभियानों के लिए ब्रिटिश सैन्य ठिकानों के अमेरिकी इस्तेमाल को जारी रखने की मंजूरी दी, जिससे उनके पूर्ववर्ती द्वारा स्थापित नीति बरकरार रही।

28 फरवरी को, अमेरिका और इजरायल ने तेहरान और ईरान के अन्य शहरों पर संयुक्त हमले किए, जिसमें ईरान के तत्कालीन सर्वोच्च नेता अली खामेनेई, वरिष्ठ सैन्य कमांडर और नागरिक मारे गए। ईरान ने जवाब में क्षेत्र में अमेरिकी और इजरायली ठिकानों और संपत्तियों पर मिसाइल और ड्रोन हमलों की झड़ी लगा दी, साथ ही होर्मुज पर अपना नियंत्रण और कड़ा कर दिया।

'आजादी का मतलब मनमानी नहीं': युवाओं से बोले डोभाल- राष्ट्रहित को पहले रखें

एजेंसी, पुणे।

देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल को शनिवार को पुणे में लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार 2026 से सम्मानित किया गया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया। इस मौके पर अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति को मजबूत बनाने में अजीत डोभाल की अहम भूमिका रही है। वहीं, पुरस्कार ग्रहण करने के बाद डोभाल ने देश के युवाओं से राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने और निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर देश निर्माण में योगदान देने की अपील की।

युवाओं से राष्ट्रहित को सर्वोच्च रखने की अपील

इस दौरान पुरस्कार स्वीकार करते हुए एनएसए अजीत डोभाल ने कहा कि वह इस सम्मान को विनम्रता के साथ स्वीकार कर रहे हैं। उन्होंने युवाओं से कहा कि वे अपने जीवन का लक्ष्य केवल राष्ट्रहित रखें और छोटे-छोटे व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठें। उन्होंने कहा, 'आज के युवाओं को यह संकल्प लेना चाहिए कि वे केवल देश के हित में काम करेंगे। यदि

कभी निजी हित और राष्ट्रहित के बीच चुनाव करना पड़े, तो वे राष्ट्रहित को प्राथमिकता दें'।

'भारत के पास सुनहरा अवसर, इसे गंवाना नहीं चाहिए'

अजित डोभाल ने कहा कि भारत इस समय अपने इतिहास के बेहद महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। उन्होंने कहा कि देश के सामने विकास और राष्ट्र निर्माण का एक बड़ा अवसर है और इसे किसी भी कीमत पर नहीं गंवाना चाहिए। उन्होंने कहा, 'हमारे देश के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण अवसर है। अभी हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता राष्ट्र निर्माण होनी चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि हम इस मिशन में सफल होंगे और नया इतिहास रचेंगे'।

पीएम मोदी और अमित शाह के नेतृत्व की सराहना

अजित डोभाल ने कहा कि देश सौभाग्यशाली है कि उसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जैसे नेतृत्व का मार्गदर्शन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें अमित शाह के साथ काम करने का अवसर मिला है और उनकी स्पष्ट सोच तथा देश के प्रति समर्पण प्रेरणादायक है।

लोकमान्य तिलक के दिखाए रास्ते पर चलें छात्र- अमित शाह

इस दौरान अमित शाह ने छात्रों से कहा कि वे लोकमान्य तिलक के दिखाए रास्ते पर चलें। उनका यह बयान ऐसे समय आया है, जब कुछ दिन पहले नीट पेपर लीक मामले को लेकर जंतर-मंतर पर व्यापक प्रदर्शन हुए। प्रदर्शन कर रहे युवाओं को हटाने के लिए पुलिस ने शॉक बैटन और आंसू गैस का इस्तेमाल किया था, जिसमें कई लोग घायल हुए थे। देशभर में युवाओं के बड़े विरोध प्रदर्शन के बाद केंद्र सरकार को पीछे हटना पड़ा था। इसके बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया था। इस मुद्दे को लेकर संसद में भी जमकर हंगामा हुआ था। इन घटनाक्रमों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक वीडियो संदेश जारी कर युवाओं को संबोधित किया था।

'रक्षा तैयारियों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका'

गृह मंत्री ने कहा कि अजीत डोभाल ने इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) में लंबे समय तक सेवा दी और बाद में एनएसए बनने के बाद कई रणनीतिक योजनाओं को जमीन पर उतारा। उन्होंने कहा कि डोभाल ने सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण, नई तकनीक को बढ़ावा देने, सेना की परिचालन क्षमता बढ़ाने और देश की रक्षा तैयारियों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शाह ने यह भी कहा कि खुफिया एजेंसियों से जुड़े कामों की प्रकृति ऐसी होती है कि डोभाल के कई योगदान कभी सार्वजनिक नहीं किए जा सकते। अमित शाह ने कहा कि पिछले 12 वर्षों में मोदी सरकार ने भारत की रक्षा व्यवस्था की रक्षात्मक और आक्रामक दोनों क्षमताओं को मजबूत किया है, जिसमें अजीत डोभाल का बड़ा योगदान रहा है।

लोकमान्य तिलक के त्याग को किया याद

अजीत डोभाल ने कहा कि लोकमान्य तिलक केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि समाज सुधारक और दार्शनिक भी थे। उन्होंने बताया कि जब पुणे में प्लेग फैला और उनके 21 वर्षीय बेटे की मृत्यु हो गई, तब भी तिलक शहर छोड़कर नहीं गए, बल्कि लोगों के बीच रहकर उनकी सेवा करते रहे। अजित डोभाल ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी शायद यह समझती है कि आजादी का मतलब केवल अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीना है, लेकिन आजादी उन लोगों के त्याग और बलिदान का परिणाम है जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। उन्होंने कहा कि अधिकारों के साथ जिम्मेदारियों को भी समझना जरूरी है और उनका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकमान्य तिलक का स्वराज का संदेश केवल एक नारा नहीं था, बल्कि वह चाहते थे कि देश का हर नागरिक आत्मसम्मान, कर्तव्य और राष्ट्रभक्ति की भावना के साथ जीवन जिए।

इस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने सबसे पहला महत्वपूर्ण फैसला अजीत डोभाल को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त करने का लिया था। उन्होंने कहा कि डोभाल ने भारत की विदेश नीति को मजबूत बनाने में बड़ा योगदान दिया है। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े प्रधानमंत्री के हर महत्वपूर्ण फैसले के पीछे उनका मार्गदर्शन और सलाह रही है।

मेंटल हेल्थ को बूस्ट करने में मददगार है अरोमाथेरेपी

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में फिजिकल हेल्थ खराब होने के साथ ही मेंटल हेल्थ पर भी काफी असर पड़ रहा है। हर दूसरा बंदा काम के बोझ के तले इतना दब गया है कि उसे अपने लिए टाइम ही नहीं है। तनाव के कारण एंग्जाइटी और डिप्रेशन जैसी दिक्कत होने लगी है। लोगों की नींद प्रभावित हो रही है, फोकस करने में परेशानी आती है। अगर आप भी इस तरह की परेशानी होती है तो आप मेंटल हेल्थ को बूस्ट करने के लिए अरोमाथेरेपी का सहारा ले सकते हैं।

क्या होती है अरोमाथेरेपी

अरोमाथेरेपी जैसा की इसके नाम से मालूम चल रहा है अरोमा मतलब खुशबू और थेरेपी मतलब इलाज,खुशबू की मदद से इलाज करने को ही हम अरोमाथेरेपी कहते हैं । यह मानसिक तनाव का इलाज करने का सबसे कारगर तरीका है। एसेंशियल ऑयल्स इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं,यह तेल पौधों,जड़ी बूटियों फूलों,पंखुड़ियों जैसी चीजों से निकाले जाते हैं।

मेंटल हेल्थ को कैसे बूस्ट करता है अरोमाथेरेपी

एक्सपर्ट के मुताबिक लैवेंडर कैमोमाइल जैसे एसेंशियल ऑयल्स में शांत करने वाले गुण होते हैं जो तनाव और चिंता को कम करने में मदद करते हैं,इससे बेहतर नींद को बढ़ावा मिलता है और जब आप सुकून भरी नींद सोते हैं तो इससे मस्तिष्क के सेल्स रिपेयर होते हैं । एसेंशियल ऑयल्स की खुशबू लेने से कोर्टिसोल का स्तर कम हो सकता है,जो तनाव के लिए जिम्मेदार हार्मोन होता है,जब आपका कोर्टिसोल हार्मोनकम होता है तो आपको सुकून भरी नींद आती है इससे मेंटल हेल्थ बूस्ट होता है। एसेंशियल ऑयल्स मूड पर पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं,अवसाद की भावनाओं को कम कर देवदार की लकड़ी और चंदन जैसी सुगंध गहरी, अधिक आरामदायक नींद चक्र को बढ़ावा देकर नींद की गुणवत्ता को बढ़ा सकती है। क्लैरी सेज जैसे एसेंशियल ऑयल नींद को नियंत्रित करने वाले हार्मोन को संतुलित करने में मदद कर सकते हैं जिससे नींद का पैटर्न सही हो जाता है। अच्छी खुशबू वाला कमरा एक शांत और आरामदायक वातावरण बनाता है जिससे आराम करना और नींद आना आसान हो जाता है।

काफी गंभीर हो सकते हैं किडनी में बीमारी के ये लक्षण

स्किन और नाखूनों से ये दिखाई देता है कि हमारी किडनी में किस तरह की बीमारी होने जा रही है। आपको ये ध्यान रखना चाहिए कि किडनी के लक्षण काफी गंभीर हो सकते हैं।

हमारा शरीर आने वाले हर खतरे का संकेत पहले से ही देने लगता है। शरीर में अगर कोई बड़ी समस्या होने वाली है तो उससे पहले छोटी-छोटी चीजों से हमें कुछ न कुछ संकेत मिलते रहते हैं। शरीर का कोई भी बड़ा ऑर्गेन खराब हो रहा हो तो कई बार हमें स्किन और बालों के जरिए भी उसके संकेत मिलने लगते हैं। ऐसा ही किडनी की बीमारी के साथ भी होता है। किडनी की बीमारी होने से पहले स्किन पर कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। यहां सिर्फ बालों का झड़ना या फिर हेयर लाइन शुरू होते ही फ्लेकी स्किन नहीं बल्कि नाखूनों, पैरों, हाथों आदि पर भी असर दिखता है और आपको ये ध्यान रखना चाहिए कि अगर ऐसे कोई लक्षण दिख रहे हैं तो आपको एक्सपर्ट की सलाह लेनी चाहिए। पर आखिर कौन से संकेत हैं जो साफ दिखाई देते हैं।

किडनी की बीमारी के समय शरीर में होती है ये समस्या

स्किन, बाल और नाखून हमारी सेहत को लेकर बहुत ही जरूरी संकेत देते हैं। कोई भी छुपी हुई बीमारी जैसे मालन्यूट्रीशन, माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का ओवरडोज, दवाओं का असर या बीमारी आदि के संकेत इन दोनों से मिल जाते हैं। जिन लोगों को किडनी की बीमारी या किडनी फेलियर का रिस्क होता है उन्हें जिंक, कैल्शियम, आयरन, विटामिन क्रजैसे मिनरल्स दिए जाते हैं। जिन मरीज़ों को डायलेसिस की जरूरत होती है उन्हें इन मिनरल्स की कमी के लिए रीनल विटामिन्स दिए जाते हैं जिनमें विटामिन क्रकॉम्प्लेक्स के हाई लेवल होते हैं। कैल्शियम और आयरन को ब्लड लेवल में मॉनिटर किया जाता है और अगर ये लेवल कम होते हैं तो सप्लिमेंट्स उसी हिसाब से दिए जाते हैं।

किडनी की बीमारी के कारण स्किन पर दिखते हैं ये असर

किडनी की बीमारी के कारण शरीर में टॉक्सिन्स काफी बढ़ जाते हैं और इसके कारण स्किन में नाइट्रोजन भी बढ़ जाता है। स्किन बहुत ड्राई, खुजली वाली हो जाती है। इसी के साथ, स्किन में क्रैक्स, स्केल्स आदि बनने लगते हैं। स्किन काफी पतली हो जाती है और बहुत आसानी से स्ट्रेच मार्क्स भी आ जाते हैं जो कच्चे होते हैं और खुजली वाले भी होते हैं। इनमें आसानी से ब्लीडिंग होने लगती है। स्किन ज्यादा सफेद दिखने लगती है और इसका रंग भी ग्रे, ब्लू, पर्पल या येलो शेड का हो जाता है। सिस्ट्स और स्पॉट्स भी दिख सकते हैं।

हाथ और पैरों में आ जाती है बहुत ज्यादा सूजन

हाथों और पैरों में सूजन, चेहरे में सूजन, ऐड़ियों में सूजन आना बहुत ही आम लक्षण है जिसे लेकर आपको तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। शरीर से टॉक्सिन्स ठीक तरह से बाहर न निकल पाने के कारण ये होता है और आपको इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि ऐसा लक्षण गंभीर समस्या की तरफ इशारा करता है इसलिए डॉक्टर से सलाह लें।

किडनी की बीमारी के कारण नाखूनों पर दिखते हैं ये असर

नाखूनों पर भी किडनी की बीमारी का असर साफ दिखाई देता है। सफेद बैंड्स या स्पॉट्स नाखूनों पर बनने लगते हैं और ये कमजोर, कच्चे और फ्लेकी हो जाते हैं। अक्सर ऐसे नाखूनों के बीच में लाइन बनने लगती है। हमारे नाखून कई और बीमारियों के संकेत भी देते हैं और ऐसे में हमें ये ध्यान रखना चाहिए कि हम ऐसे कोई भी लक्षण के दिखने पर डॉक्टर से बात करनी चाहिए।

स्किन पर दाने और रैशेज

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि किडनी की बीमारी के कारण शरीर में टॉक्सिन बहुत ज्यादा इकट्ठा हो जाता है और ये रैशेज, बंप्स, ब्लीडिंग वाली स्ट्रेचमार्क्स आदि का कारण बनता है ऐसे में आप शरीर में कई तरह के मिनरल्स आदि का टेस्ट करवा सकते हैं। ये सारे लक्षण किसी अन्य वजह से भी हो सकते हैं, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि ये सिर्फ और सिर्फ किडनी के कारण हों। आपको ये ध्यान रखना होगा कि अगर आपको कोई समस्या हो रही है तो एक्सपर्ट की सलाह लेना ही किसी गंभीर रोग से मुक्ति का अच्छा कारण हो सकता है। अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न दिखाएं और डॉक्टर से सलाह लेते रहें।

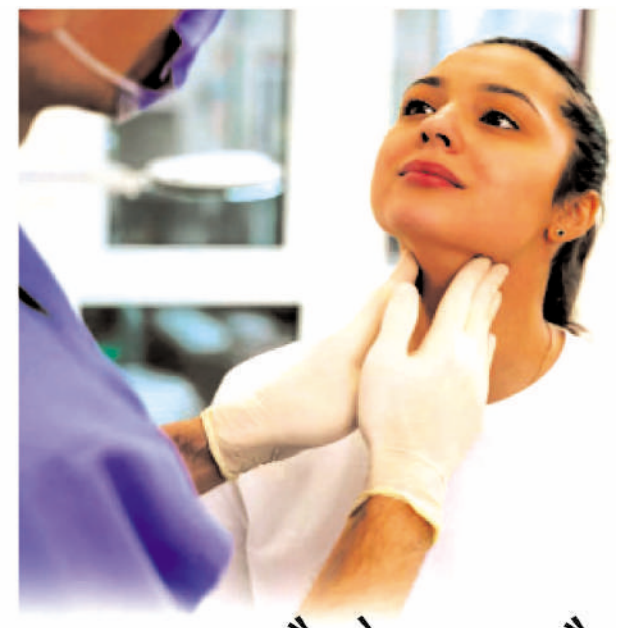

थायराइड कैसे करता है हार्ट हेल्थ को प्रभावित

आजकल थायराइड की बीमारी काफी आम हो चुकी है। थायराइड रोग वह स्थिति है जिसमें थायराइड ग्लैंड शरीर की जरूरत से कम या अधिक हार्मोन का निर्माण करने लगता है जिसके कारण कई सारी समस्याएं पैदा होती है। थायराइड के कारण जहां मोटापा हेयर फॉल , जोड़ों में दर्द जैसी समस्या होती है वहीं यह दिल की सेहत को भी बुरी तरह से प्रभावित करता है। इसको लेकर हमने एक्सपर्ट से बात की है। आइए जानते हैं थायराइड कैसे दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ा देता है।

कैसे करता है हार्ट हेल्थ को प्रभावित

एक्सपर्ट बताती हैं की दोनों ही थायराइड हार्ट हेल्थ को प्रभावित करता है। हाइपोथायरायडिज्म की बात करें तो इसमें थायराइड हार्मोन का लेवल शरीर में कम हो जाता है,इससे थायराइड ग्लैंड का फंक्शन कम होने लगता है,इससे मेटाबॉलिज्म खराब हो जाता है,इससे दिल को नुकसान हो सकता है जैसे इससे हार्ट रेट स्लो हो जाता है,इससे आपको ब्रेडीकार्डिया की स्थिति पैदा हो जाती है। इससे कोलेस्ट्रॉल भी बढ़ सकता है,इसके कारण हृदय का फैलाव हो सकता है। इससे दिल का दौरा पड़ सकता है।थायराइड बढ़ने से हार्ट की धमनियां संकरी होने लगती है,इससे ब्लड का सर्कुलेशन ठीक ढंग से नहीं हो पाता है,लंबे समय तक यह स्थिति बनी रहने पर हार्ट अटैक आने का खतरा बना रहता है। हाइपरथायरायडिज्म में आपका थायराइड ग्लैंड ओवर एक्टिव हो जाता है इससे हाइपर मेटाबॉलिज्म होता है जिससे हार्ट रेट बढ़ सकता है,इससे ट्रैकी कार्डिया की स्थिति पैदा हो सकती है। इस स्थिति में भी हार्ट का फैलाव हो जाता है। ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है और इस तरह से हार्ट को नुकसान पहुंचता है।

गंभीर डिसऑर्डर की तरफ इशारा करती है हर वक्त कच्चा बर्फ खाने की इच्छा

क्या आपको भी हर वक्त कच्चा बर्फ चबाने का दिल करता है। अगर हां तो आपको फौरन डॉक्टर से मिलना चाहिए क्योंकि यह एक गंभीर डिसऑर्डर की तरफ इशारा करता है।

गर्मियों के मौसम में हर किसी को कुछ ना कुछ ठंडा खाने का मन करता है। ठंडा पानी तो हर कोई पीता है, लेकिन आइसक्रीम मिल जाए तो सोने पर सुहागा हो जाता है। गर्मी से राहत पाने के लिए कुछ लोग तो घर में रखे आइस क्यूब भी खाते हैं। लेकिन अगर आप बार-बार कच्ची बर्फ चबाते हैं तो इसे इग्नोर ना करें। दरअसल आपकी यह आदत किसी बीमारी की तरफ इशारा करती है। आइए जानते हैं बार-बार बर्फ खाने का मन क्यों करता है।

क्या आपको भी बार-बार बर्फ खाने का मन करता है आपको भी बार-बार बर्फ खाने की क्रेविंग होती है तो शायद आप पिका डिसऑर्डर से पीड़ित हैं। वैसे तो यह बच्चों या गर्भवती महिलाओं में होता है, लेकिन अगर आप में आयरन की कमी हो तो भी आपको इसकी क्रेविंग हो सकती है। एक्सपर्ट बताते हैं कि एनीमिया से पीड़ित लोगों में रेड ब्लड सेल्स की कमी हो जाती है ऐसे में लोगों को बर्फ खाने की इच्छा बढ़ जाती है। वहीं जो लोग मानसिक तनाव से गुजर रहे होते हैं उन्हें भी बर्फ खाने की क्रेविंग होती है। अगर यह क्रेविंग लंबे समय तक बनी हुई है तो आपको तुरंत डॉक्टर से मिलकर इसका इलाज करवाना चाहिए।

क्या हैं इसके नुकसान

- दांतों में दर्द, बर्फ आपके दांत की इनेमल की परत को डैमेज कर सकती है।
- एनीमिया की गंभीर समस्या,इसके कारण हार्ट हेल्थ को नुकसान पहुंचता है।
- पेट में इंफेक्शन और कब्ज की समस्या

छींक क्यों नहीं रोकनी चाहिए

छींक आना नॉर्मल है। लेकिन, अगर आपको बहुत अधिक छींक आती है, तो इसे नजरअंदाज करें। इसके अलावा, अगर आप छींक आते वक्त इसे रोकती हैं, तो इससे भी सेहत को नुकसान हो सकता है।

हमारा शरीर सेहतमंद रहने के लिए कई नेचुरल प्रोसेस को फॉलो करता है। पेट साफ होना, गैस बाहर निकलना, डकार आना और छींक आना समेत कई ऐसी चीजें हैं, जिनका हमारी सेहत से गहरा कनेक्शन है। कई बार, नाक के अंदर डस्ट और पाउडर जैसे पार्टिकल्स चले जाते हैं। इन्हें बाहर निकालने के लिए, छींक आती है। वहीं, सर्दी-जुकाम होने पर भी छींक आती है। हालांकि, अगर आपको अक्सर बहुत अधिक छींक आती हैं, तो इसके पीछे कुछ हेल्थ कंडीशन्स हो सकती हैं। आमतौर पर छींक आना काफी नॉर्मल होता है। कई लोग, छींक आने पर इसे रोक लेते हैं। लेकिन, सेहत के लिहाज से ऐसा करना गलत है। एक्सपर्ट के मुताबिक, अगर आप छींक रोकती हैं, तो इससे स्वास्थ्य से जुड़ी कई समस्याएं हो सकती हैं। इस बारे में डॉक्टर नीतिका कोहली जानकारी दे रही हैं। वह आयुर्वेद में एमडी हैं। उन्हें इस फील्ड मे लगभग 17 सालों का अनुभव है।

छींक रोकने से सेहत को हो सकता है नुकसान

- दरअसल, हमारी नाक में एक म्यूकस नाम की झिल्ली होती है। इसके टिश्यू या सेल्स पर जब कोई डस्ट पार्टिकल आकर चिपकता है, तो इसे बाहर निकालने के लिए छींक आती है।
- आयुर्वेद में छींक को श्वतु कहा जाता है। इसे अधारणीय वेग कहा जाता है। इसकी गिनती उन वेगों में होती हैं, जिन्हें रोका नहीं जा सकता है और रोकना भी नहीं चाहिए।
- छींक के जरिए, बैक्टीरिया और वायरस नाक से बाहर निकल जाते हैं। इसलिए, यह फायदेमंद होती है।
- छींक रोकना सेहत के लिहाज से सही नहीं है। इससे गर्दन अकड़ सकती है और साइनस की दिक्कत भी हो सकती है।
- अगर आप छींक आने पर इसे रोकने की कोशिश करते हैं, तो इससे फेस की नर्व्स और मसल्स कमजोर हो सकती हैं।
- यह शरीर की सफाई का एक नेचुरल प्रोसेस है। इसलिए, इसे होल्ड नहीं करना चाहिए।
- एक्सपर्ट के मुताबिक, कई बार सोशल एटिकेट्स या अन्य कई वजहों से लोग छींक को रोक लेते हैं। लेकिन, छींक रोकने से फेफड़ों पर दबाव पड़ता है। इससे श्वसन तंत्र पर बुरा असर हो सकता है।
- छींक के जरिए, बाहर निकलने वाली हवा का प्रेशर काफी तेज होता है। इसे रोकने से, आंख, नाक और कान के ब्लड वेसल्स पर असर पड़ सकता है।
- छींक आने पर उसे रोकने की कोशिश न करें। एक्सपर्ट की सलाह पर जरूर ध्यान दें। अगर आपको स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या है, तो हमें आर्टिकल के ऊपर दिए गए कमेंट बॉक्स में बताएं। हम अपने आर्टिकल्स के जरिए आपकी समस्या को हल करने की कोशिश करेंगे।

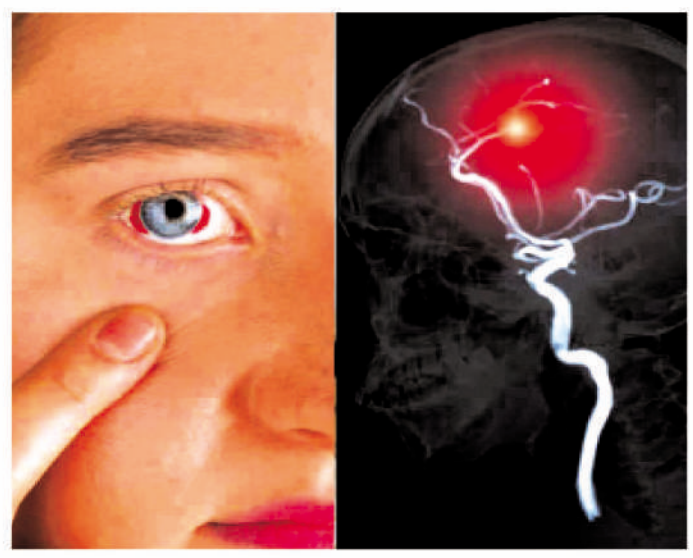

बिट्टू की कुर्सी खाली

भाजपा को जनाधार बढ़ाने वाले चेहरे की तलाश, कई पर नजर

संवाददाता, चंडीगढ़।

केंद्रीय रेल एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू के इस्तीफे के बाद पंजाब से केंद्र सरकार में भाजपा का प्रतिनिधित्व है। राष्ट्रपति ने 24 जुलाई 2026 को उनका इस्तीफा स्वीकार किया।

अब मोदी सरकार पंजाब से अगला केंद्रीय मंत्री किसे बनाएगी, इस पर राजनीतिक गलियारों में चर्चा तेज है। भाजपा आलाकमान ने अभी तक किसी नाम की आधिकारिक घोषणा नहीं की है। संभावित कैबिनेट विस्तार और फेरबदल की अटकलों के बीच कई नेताओं के नाम चर्चा में हैं।

भाजपा के लिए यह फैसला 2027 के पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक, सामाजिक और क्षेत्रीय समीकरण साधने का होगा। पार्टी ऐसे चेहरे की तलाश में है जो संगठन को मजबूत करे और राज्य में जनाधार बढ़ाए। पूर्व पंजाब भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ प्रमुख दावेदारों में से हैं।

उनकी साफ-सुथरी छवि, प्रशासनिक अनुभव और किसान परिवार से जुड़ाव उन्हें एक मजबूत विकल्प बनाता है। हालांकि, वह फिलहाल संसद सदस्य नहीं हैं। यदि उन्हें मंत्री बनाया जाता है तो छह महीने के भीतर लोकसभा या राज्यसभा का सदस्य बनना होगा।

जाखड़ का पंजाब की राजनीति में गहरा प्रभाव है और वह प्रधानमंत्री मोदी व अमित शाह के करीबी माने जाते हैं। रवनीत सिंह बिट्टू को भी पंजाब संगठन में बड़ी जिम्मेदारी मिलने की अटकलें हैं।

अन्य प्रमुख दावेदार

दूसरे मजबूत दावेदारों में तरुण चुघ का नाम सबसे आगे है। वह भाजपा संगठन के भरोसेमंद रणनीतिकार और राष्ट्रीय नेतृत्व के करीबी माने जाते हैं। हाल ही में राज्यसभा पहुंचने से उनका राजनीतिक कद बढ़ा है। हालांकि, संगठन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका मंत्री बनने में बाधा बन सकती है।

नए चेहरों पर भी नजर

हाल ही में आम आदमी पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा, अशोक मित्तल और विक्रमजीत सिंह साहनी के नाम भी चर्चा में हैं। तीनों के पास संसदीय अनुभव है और अलग-अलग सामाजिक वर्गों में प्रभाव रखते हैं। राघव चड्ढा युवा नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा में उनके हालिया प्रवेश से उन्हें तुरंत केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह मिलना मुश्किल होगा।

उद्योगपति एवं शिक्षाविद अशोक मित्तल उद्योग और शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी मजबूत पहचान रखते हैं, जबकि उद्योगपति एवं समाजसेवी विक्रमजीत सिंह साहनी पंजाब और प्रवासी भारतीय समुदाय में अच्छी पकड़ रखते हैं।

इसके बावजूद राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा में उनका प्रवेश अपेक्षाकृत हाल का होने के कारण उन्हें तुरंत केंद्रीय मंत्रिमंडल में स्थान मिलना आसान नहीं होगा।

बिट्टू के भविष्य को लेकर भी अटकलें जारी

रवनीत सिंह बिट्टू के भविष्य को लेकर भी राजनीतिक अटकलें जारी हैं। मंत्री पद छोड़ने के बावजूद भाजपा में उनकी भूमिका खत्म होती नहीं दिख रही। पार्टी उन्हें पंजाब संगठन में बड़ी जिम्मेदारी दे सकती है। राजनीतिक हलकों में यह चर्चा भी है कि यदि भाजपा पंजाब में नए नेतृत्व के साथ चुनावी रणनीति बनाती है तो बिट्टू को प्रदेश अध्यक्ष जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी सौंपी जा सकती है। हालांकि इस संबंध में पार्टी की ओर से कोई आधिकारिक संकेत नहीं दिया गया है।

भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह ऐसा चेहरा चुने जो सिख, हिंदू, शहरी, ग्रामीण और दलित सभी वर्गों के बीच सकारात्मक संदेश दे सके। इसके साथ ही 2027 के विधानसभा चुनाव, संगठनात्मक अनुभव, क्षेत्रीय संतुलन, संसदीय क्षमता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व के प्रति विश्वास जैसे सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर ही अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

पंजाब का केंद्र की राजनीति में हमेशा महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राज्य ने देश को दो प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और इंद्र कुमार गुजराल दिए। इसके अलावा सरदार स्वर्ण सिंह, ज्ञानी जैल सिंह, बूटा सिंह, सुरजीत सिंह बरनाला, प्रकाश सिंह बादल, सुखदेव सिंह ढींडसा, हरसिमरत कौर बादल, अंबिका सोनी, अश्वनी कुमार, मनीष तिवारी, एम.एस. गिल, सोम प्रकाश, विजय सांपला और रवनीत सिंह बिट्टू जैसे अनेक नेता केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री या राज्य मंत्री के रूप में पंजाब का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। ज्ञानी जैल सिंह तो राष्ट्रपति भी बने।

अब सभी की निगाहें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व पर टिकी हैं। यदि जल्द कैबिनेट विस्तार होता है तो पंजाब को दोबारा केंद्रीय मंत्रिमंडल में प्रतिनिधित्व मिलने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

पंजाब में 26 फीसदी बारिश कमः बांधों में घटा जलस्तर, खेती और बिजली संकट का खतरा

संवाददाता, चंडीगढ़।

पंजाब में मानसून के पहले महीने जुलाई में बारिश ने चिंता बढ़ा दी है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के आंकड़ों के अनुसार राज्य में जुलाई में सामान्य से 26 फीसदी कम बारिश हुई है। सामान्य 161.4 मिलीमीटर के मुकाबले इस बार केवल 119.3 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। जून और जुलाई में कम बारिश का असर प्रमुख बांधों के जलस्तर पर भी पड़ा है। इससे आने वाले दिनों में सिंचाई के लिए पानी की कमी और बिजली उत्पादन प्रभावित होने का खतरा बढ़ गया है।

इस बार पठानकोट, गुरदासपुर, अमृतसर और फरीदकोट को छोड़कर सभी जिलों में बारिश सामान्य से कम रही। कई जिलों में कमी 71 फीसदी तक दर्ज की गई। पठानकोट में सबसे अधिक 495.5 एमएम बारिश हुई जबकि मानसा में सबसे कम 38.4 एमएम बारिश दर्ज की गई। मानसा के अलावा मुक्तसर, बठिंडा, बरनाला, फतेहगढ़ साहिब और फाजिल्का में भी बारिश की कमी रही।

बांधों में भी कम हुआ पानी का भंडार

कम बारिश का असर हिमाचल प्रदेश स्थित प्रमुख बांधों पर भी दिखाई दे रहा है। भाखड़ा बांध में इस समय पानी का स्तर 1599.33 फुट है जो पिछले साल के मुकाबले 21.67 फुट कम है। वहीं पौंग बांध में जलस्तर 1338.40 फुट दर्ज किया गया है जो पिछले साल की तुलना में 15.69 फुट नीचे है। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार हिमाचल प्रदेश में भाखड़ा, पौंग और कोल बांधों के जलाशयों में कुल भंडारण सामान्य से 10.83 फीसदी कम है। पंजाब के रणजीत सागर बांध में भी जल भंडारण सामान्य से 9.21 फीसदी कम दर्ज किया गया है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार जलवायु परिवर्तन और अल नीनो जैसी परिस्थितियों के कारण मानसूनी बारिश प्रभावित हुई है। इसके अलावा बंगाल की खाड़ी से आने वाली नमी वाली हवाओं और कम दबाव वाले सिस्टम का पंजाब की ओर रुख नहीं करने से भी बारिश कम हुई। अब अगस्त की बारिश पर सभी की नजरें टिकी हैं। मौसम विभाग ने पांच अगस्त तक पंजाब के कुछ जिलों में भारी बारिश की संभावना जताई है। अगर अगस्त में भी बारिश कम रहती है तो बांधों में जलस्तर और नीचे जा सकता है जिससे सिंचाई और बिजली उत्पादन पर असर पड़ सकता है।

चार जिलों में ही सामान्य से ज्यादा बारिश

पठानकोट, गुरदासपुर, अमृतसर और फरीदकोट में जुलाई में बारिश सामान्य से अधिक रही। पठानकोट में सबसे ज्यादा 495.5 एमएम बारिश दर्ज की गई। वहीं मानसा में सबसे कम 38.4 एमएम बारिश हुई।

कांग्रेस की रार नहीं हो रही खत्म

पटियाला में भूपेश बघेल और राजा वड़िंग के सामने चन्नी के हक में लगे नारे

संवाददाता, पटियाला।

पंजाब कांग्रेस में चल रहे मतभेद एक बार फिर उभर कर सामने आ गए हैं। शनिवार को पटियाला में पार्टी की बैठक में पंजाब कांग्रेस के प्रधान अमरिंदर सिंह राजा वडिंग के संबोधन के दौरान चरणजीत चन्नी के हक में पार्टी कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करनी शुरू कर दी।

बैठक में भूपेश बघेल और अन्य पूर्व एमएलए समेत पूरी कांग्रेस लीडरशिप मौजूद थी। हालांकि वड़िंग ने कार्यकताओं को चुप रहने की अपील की लेकिन वह नहीं माने। इससे पहले भूपेश बघेल ने झंडा फहराने की रस्म निभाई। भरे पंडाल में जहां वडिंग के कैंप के नेता थे। चरणजीत सिंह चन्नी कैंप का कोई लीडर मौजूद नहीं था। पंडाल में चरणजीत सिंह चन्नी जिंदाबाद के नारे लगाए गए।

पंजाब कांग्रेस में गुटबाजी बढ़ती जा रही है। शनिवार को पंजाब कांग्रेस प्रभारी भूपेश बघेल ने फतेहगढ़ साहिब से प्रदेशव्यापी हर बूथ मजबूत अभियान की शुरूआत की। इस दौरान चन्नी गुट के कोई प्रमुख नेता कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए। राजनीतिक हलकों में माना जा रहा है कि नाराज नेताओं की सार्वजनिक चुप्पी भी पार्टी नेतृत्व पर दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा है। यदि चुनाव से पहले मतभेद दूर नहीं हुए तो इसका असर संगठन और चुनावी तैयारी दोनों पर पड़ सकता है।

एकजुटता का दावा कर चुके हैं बघेल

हालांकि बघेल दावा कर रहे हैं कि पंजाब कांग्रेस पूरी तरह एकजुट है और सभी अंदरूनी मुद्दों का समाधान हो चुका है। मुख्यमंत्री के चेहरे के सवाल पर भी उन्होंने साफ कर दिया है कि पार्टी हाईकमान पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ही प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बने रहेंगे।

सात करोड़ की रंगदारी मांगने वाले गिरोह का पर्दाफाश, 4 बदमाश गिरफ्तार

पानीपत पुलिस ने एक शिक्षण संस्थान संचालक से 7 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने के मामले का बड़ा खुलासा किया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रंगदारी मांगने के आरोप में चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों को प्रेसवार्ता के दौरान मीडिया के सामने पेश कर मामले से जुड़ी अहम जानकारियां साझा कीं। पुलिस के मुताबिक, पानीपत के एक शिक्षण संस्थान संचालक को कॉल कर 7 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगी गई थी। रंगदारी की मांग के बाद मामला पुलिस अधीक्षक भूपेंद्र सिंह आईपीएस के संज्ञान में आया। एसपी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तुरंत जांच और आरोपियों की धरपकड़ की जिम्मेदारी सीआईए वन टीम को सौंपी।

सीआईए वन की टीम ने मामले की जांच शुरू करते हुए तकनीकी साक्ष्यों और मजबूत सूचना तंत्र की मदद से आरोपियों तक पहुंच बनाई। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद आरोपियों को पुलिस ने मीडिया के सामने पेश किया और पूरे मामले की जानकारी दी। पुलिस जांच में यह भी पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि रंगदारी मांगने की साजिश के पीछे कौन-कौन लोग शामिल थे और आरोपियों ने शिक्षण संस्थान संचालक को ही निशाना क्यों बनाया।

हर सिख दंपती कम से कम तीन बच्चे पैदा करे: कुलदीप गड़गज्ज

संवाददाता, फरीदकोट।

सिख कौम की संख्या और ताकत बनाए रखने के लिए हर सिख दंपति को कम से कम तीन बच्चे पैदा करने चाहिए। यह बात श्री अकाल तख्त साहिब से तख्त श्री दमदमा साहिब तक निकाले जा रहे मीरी-पीरी खालसा मार्च की अगुवाई कर रहे जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज्ज ने फरीदकोट में कही।

उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में सिख कौम का एकजुट रहना सबसे बड़ी जरूरत है और कौम चढ़दी कला में रहकर ही अपनी पहचान, शक्ति और गौरव को कायम रख सकती है। श्री अकाल तख्त साहिब अमृतसर से शुरू हुआ मीरी-पीरी खालसा मार्च शुक्रवार को फरीदकोट पहुंचा। संगतों ने फूल बरसाकर और जयकारों के साथ मार्च का स्वागत किया। विभिन्न सिख जत्थेबंदियों ने मार्च की अगुवाई कर रहे जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज्ज को सिरोपा भेंट कर सम्मानित किया।

24 जुलाई 2026 को शुरू हुआ यह मार्च 3 अगस्त 2026 को तख्त श्री दमदमा साहिब में संपन्न होगा। छठे पातशाह श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के मीरी-पीरी सिद्धांत, सिख कौम की एकता और श्री अकाल तख्त साहिब की सर्वोच्चता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से यह मार्च निकाला जा रहा है। इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप के साथ श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के पावन शस्त्रों के भी संगत ने दर्शन किए।

मार्च वीरवार देर शाम फरीदकोट पहुंचा था। रात्रि विश्राम के बाद शुक्रवार सुबह गुरुद्वारा खालसा दीवान से इसकी शुरूआत हुई। फरीदकोट शहर के अलावा संधवां, कोटकपूरा, ढिलवां कलां, बहिबल कलां और बरगाड़ी समेत कई स्थानों पर संगत ने स्वागत किया।

जत्थेदार गड़गज्ज ने पंजाब में बढ़ रहे नशे पर चिंता जताते हुए कहा कि युवाओं को नशों से दूर रखना समाज की जिम्मेदारी है। उन्होंने संगत से युवाओं को दाढ़ी-केश धारण करने और गुरु साहिबान की शिक्षाओं से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सिख कौम को पंथ विरोधी ताकतों और उनकी साजिशों के प्रति भी सतर्क रहने की जरूरत है।

मीरी-पीरी सिद्धांत का संदेश

मीरी-पीरी खालसा मार्च का उद्देश्य श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के सिद्धांत, सिख कौम की एकता और श्री अकाल तख्त साहिब की सर्वोच्चता के संदेश को संगत तक पहुंचाना है। यह यात्रा 3 अगस्त को तख्त श्री दमदमा साहिब में संपन्न होगी।

युवाओं को नशे से बचाने की अपील

जत्थेदार गड़गज्ज ने कहा कि पंजाब में नशे की समस्या गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने संगत से अपने स्तर पर युवाओं को नशे से दूर रखने और उन्हें गुरु साहिबान की शिक्षाओं से जोड़ने के लिए प्रयास करने की अपील की।

महिला कांस्टेबलों की शिकायत पर एफआईआर तक दर्ज नहीं करवा पा रही सरकार: रणधीर शर्मा

संवाददाता, शिमला।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी एवं विधायक रणधीर शर्मा ने आरोप लगाया कि हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार केवल कर्मचारी विरोधी ही नहीं, बल्कि महिला विरोधी भी साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग की प्रथम बटालियन जूंगा में कार्यरत हामोर्नी ऑफ द पाइंस ऑर्केस्ट्रा ग्रुप से जुड़ा विवाद इसका स्पष्ट उदाहरण है, जहां कर्मचारियों और महिला कांस्टेबलों के साथ कथित रूप से अन्याय हो रहा है।

रणधीर शर्मा ने कहा कि सरकार ने पहले ऑर्केस्ट्रा ग्रुप के इंस्पेक्टर विजय कुमार को बिना आरोपों की निष्पक्ष जांच किए ही निलंबित कर दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी कर्मचारी के खिलाफ कार्रवाई से पहले तथ्यों की जांच होना न्याय का मूल सिद्धांत है, लेकिन सरकार ने इस मामले में जल्दबाजी और पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाया। उन्होंने कहा कि अब इसी ऑर्केस्ट्रा ग्रुप में कार्यरत दो महिला कांस्टेबल दीपिका ठाकुर और कृतिका को भी कथित रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। हाल ही में एक स्थानीय गायक गोपी जैक्स द्वारा आयोजित प्रेस वार्ता में दोनों महिला कांस्टेबलों के खिलाफ अभद्र और अपमानजनक टिप्पणियां की गईं। इसके बाद दोनों महिला कांस्टेबलों ने महिला पुलिस थाना, शिमला में शिकायत दर्ज करवाई, लेकिन अब तक उस शिकायत पर एफआईआर दर्ज नहीं की गई है।

रणधीर शर्मा ने कहा कि शिकायत में स्थानीय गायक के साथ-साथ प्रथम बटालियन के कमांडेंट भूपेंद्र नेगी का भी नाम शामिल है। शिकायत के अनुसार दोनों महिला कर्मचारियों पर लगातार दबाव बनाया गया, जिससे वे मानसिक तनाव का शिकार हुईं। उन्होंने कहा कि स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि महिला कांस्टेबल दीपिका ठाकुर को अस्पताल में भर्ती तक होना पड़ा, फिर भी सरकार और पुलिस प्रशासन मूकदर्शक बने हुए हैं।

उन्होंने कहा कि यदि महिला कर्मचारियों की शिकायत पर भी सरकार एफआईआर दर्ज नहीं करा पा रही है।

हरियाणा में संगठन होगा और मजबूत, जनता के मुद्दों पर लड़ेगी कांग्रेस: संजय दत्त

पलवल। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के हरियाणा मामलों के प्रभारी संजय दत्त एवं हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने शुक्रवार को फरीदाबाद एवं पलवल जिला कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठकों के साथ-साथ होडल, हथीन और पलवल विधानसभा क्षेत्रों के पदाधिकारियों, वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं के साथ विस्तृत संगठनात्मक संवाद किया। बैठकों में संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने, आगामी राजनीतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा, जनसंपर्क अभियान को गति देने तथा जनहित के मुद्दों पर प्रभावी संघर्ष की रणनीति पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठकों को संबोधित करते हुए संजय दत्त ने कहा कि कांग्रेस की सबसे बड़ी ताकत उसका समर्पित कार्यकर्ता है। संगठन जितना मजबूत होगा, जनता की आवाज उतनी ही प्रभावी ढंग से उठाई जा सकेगी। उन्होंने कहा कि पार्टी का लक्ष्य प्रत्येक बूथ तक सशक्त संगठन का निर्माण करना है। इसके लिए कार्यकर्ता घर-घर जाकर कांग्रेस की नीतियों, विचारधारा और जनहित के कार्यक्रमों को लोगों तक पहुंचाएं तथा आमजन की समस्याओं को संगठन के माध्यम से मजबूती से उठाएं। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार के लंबे शासनकाल में प्रदेश का युवा बेरोजगारी से जूझ रहा है, किसान आर्थिक संकट का सामना कर रहा है और आम जनता लगातार बढ़ती महंगाई से परेशान है। कांग्रेस इन सभी जनहित के मुद्दों को सड़क से लेकर सदन तक पूरी मजबूती के साथ उठाती रहेगी। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती ही कांग्रेस की सबसे बड़ी शक्ति है और प्रत्येक कार्यकर्ता पार्टी की रीढ़ है। इस अवसर पर संजय दत्त और राव नरेंद्र सिंह ने प्रदेश में बढ़ती बेरोजगारी तथा सरकारी भर्तियों में लगातार हो रही देरी पर भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि लाखों युवा वर्षों से भर्ती प्रक्रियाओं के पूरा होने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन सरकार समयबद्ध एवं पारदर्शी नियुक्तियां सुनिश्चित करने में पूरी तरह विफल रही है।

नशे के खिलाफ हर युवा बने बदलाव का वाहक, दस लोगों को नशामुक्ति अभियान से जोड़े: राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष

संवाददाता, चंडीगढ़।

हरियाणा के राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने युवाओं से नशे के खिलाफ संकल्प लेने तथा समाज से इस बुराई को जड़ से समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास करने का आह्वान करते हुए कहा कि यदि प्रत्येक युवा युद्ध नशे विरुद्ध अभियान से जुड़ने के लिए दस अन्य लोगों को प्रेरित करे तो यह संकल्प एक सशक्त जनआंदोलन का रूप ले सकता है। राज्यपाल आज पंजाब के पटियाला स्थित राजीव गांधी राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में आयोजित "नशे के खिलाफ जंग" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया और हरियाणा की प्रथम महिला मित्रा घोष भी मौजूद रही सम्मेलन को युवाओं के लिए आशा और निराशा के बीच सही मार्ग चुनने का संदेश बताते हुए प्रो. घोष ने कहा कि एक रास्ता स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल और सफलता की ओर ले जाता है, जबकि दूसरा रास्ता नशे की लत, बिखरते परिवारों और टूटते सपनों की ओर। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि देश का युवा जीवन, उद्देश्य और प्रगति का मार्ग अपनाएगा तथा नशामुक्त समाज के निर्माण का अग्रदूत बनेगा। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन जन-जागरूकता के एक व्यापक अभियान की शुरूआत है, जिसका संदेश पंजाब से कहीं आगे तक जायेगा।

राज्यपाल ने युवाओं को राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि जब युवा बड़े सपने देखते हैं, कड़ी मेहनत करते हैं और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं, तो देश की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि नशे की समस्या युवाओं की ऊर्जा और सपनों पर सीधा प्रहार कर कमजोर बनाती है, परिवारों को तोड़ती है और समाज की बुनियाद को खोखला करती है। इसलिए नशे के खिलाफ लड़ाई केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखने वाली एजेंसियों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि परिवारों, शिक्षण संस्थानों, सामाजिक संगठनों और प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी है।

युवाओं से पढ़ाई का दबाव, बेरोजगारी और अकेलेपन जैसी चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने का आह्वान करते हुए प्रो. घोष ने कहा कि नशा कभी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि दृढ़ संकल्प, संवाद, उचित मार्गदर्शन और आत्मविश्वास ही जीवन की चुनौतियों का वास्तविक समाधान हैं।

उन्होंने माता-पिता और अभिभावकों से भी अपने बच्चों को केवल सुविधाएं ही नहीं, बल्कि समय, विश्वास और अपनापन देने की अपील की। उन्होंने कहा कि खुला संवाद, समय पर मार्गदर्शन और भावनात्मक सहयोग अनेक युवाओं को नशे की गिरफ्त में जाने से बचा सकता है। उन्होंने कहा कि नशे के शिकार लोगों को तिरस्कार नहीं, बल्कि सहानुभूति, उपचार और पुनर्वास की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में युवाओं के लिए विकास के व्यापक अवसर, नशे जैसी बुराई के लिए कोई स्थान नहीं

केंद्र सरकार की विभिन्न पहलों का उल्लेख करते हुए राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में फिट इंडिया, खेलो इंडिया, स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया तथा विकसित भारत-2047 जैसे कार्यक्रम युवाओं के लिए नए अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब युवाओं के सामने विकास और प्रगति के इतने व्यापक अवसर मौजूद हैं, तब नशे जैसी सामाजिक बुराई के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि हरियाणा ने खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बल पर विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। इसी प्रकार पंजाब के युवाओं ने भी खेल जगत में देश का गौरव बढ़ाया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस क्षेत्र का युवा भी अपने साहस, अनुशासन और दृढ़ संकल्प के बल पर नशे के खिलाफ इस लड़ाई में भी अग्रणी भूमिका निभाएगा तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

हिमाचल में भाजपा नेताओं पर झूठे मुकदमे दर्ज कर लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा है : डॉ. राजीव बिंदल

संवाददाता, नाहन।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश में पिछले लगभग चार वर्षों से बदले की भावना, राजनीतिक प्रतिशोध और अत्याचार की सरकार चल रही है। प्रदेश सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों को ताक पर रखकर राजनीतिक विरोधियों को झूठे मुकदमों में फंसाने का अभियान चला रही है, जो हिमाचल के लोकतांत्रिक इतिहास पर गंभीर आघात है।

डॉ. बिंदल ने कहा कि मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू जहां-जहां चुनावों में जनता का विश्वास खो रहे हैं और कांग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ रहा है, वहां अपनी राजनीतिक हताशा मिटाने के लिए भाजपा नेताओं पर मुकदमे दर्ज करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनता का जनादेश स्वीकार करने के बजाय कांग्रेस सरकार प्रतिशोध की राजनीति कर रही है।

उन्होंने कहा कि धर्मशाला नगर निगम चुनाव में सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद भाजपा ने महापौर और उपमहापौर का पद जीता। इसके बाद भाजपा विधायक सुधीर शर्मा पर मुकदमा दर्ज कर राजनीतिक प्रतिशोध लिया गया। इसी प्रकार देहरा विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस की हार के बाद भाजपा नेता होशियार सिंह को निशाना बनाया गया।

डॉ. बिंदल ने कहा कि हमीरपुर जिला परिषद चुनाव में 19 में से 17 सीटों पर भाजपा की जीत हुई और कांग्रेस जिला परिषद में अपना अस्तित्व तक नहीं बचा सकी। इसके बाद भाजपा विधायक आशीष शर्मा सहित अन्य नेताओं पर मुकदमे दर्ज किए गए। उन्होंने कहा कि सोलन नगर निगम में भाजपा की सफलता के बाद वहां भाजपा पार्षदों को भी राजनीतिक द्वेष का शिकार बनाया गया।

उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश सरकार पूरे हिमाचल में एक सुनियोजित अभियान के तहत भाजपा नेताओं को झूठे मामलों में फंसाकर डराने और लोकतांत्रिक आवाज को दबाने का प्रयास कर रही है। लेकिन भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता जनता के बीच मजबूती से खड़ा है और कांग्रेस की इस प्रतिशोध की राजनीति से डरने वाला नहीं है।

डॉ. बिंदल ने कहा कि हिमाचल की जनता सब कुछ देख रही है। कांग्रेस सरकार विकास, रोजगार और जनहित के मुद्दों पर पूरी तरह विफल रही है और अपनी नाकामियों से ध्यान हटाने के लिए राजनीतिक विरोधियों पर मुकदमे दर्ज करने का सहारा ले रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि 2027 के विधानसभा चुनाव में प्रदेश की जनता कांग्रेस सरकार को करारा जवाब देते हुए उसे सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाएगी और भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट जनादेश देगी।

अगले साल होने वाले वनडे विश्वकप के वेन्यू घोषित

दक्षिण अफ्रीका में आठ स्थलों पर होंगे मैच, जिम्बाब्वे में तीन, नामीबिया के एक शहर में एक

एजेंसी, नई दिल्ली ।

दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की मेजबानी में होने वाले 2027 वनडे विश्व कप के लिए 12 वेन्यू तय कर लिए गए हैं। सह-मेजबान दक्षिण अफ्रीका के आठ स्टेडियम इन खेलों की मेजबानी करेंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। यह प्रतिष्ठित 50 ओवर का टूनार्मेंट 24 साल बाद दक्षिण अफ्रीका में वापसी कर रहा है। इससे पहले 2003 में दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और केन्या ने आठवें पुरुष क्रिकेट विश्व कप की मेजबानी की थी।

जोहानिसबर्ग में आयोजित एक भव्य समारोह में दक्षिण अफ्रीका के आठ शहरों, जिम्बाब्वे के तीन शहरों और नामीबिया की राजधानी विंडहोक को टूनार्मेंट के सह-मेजबान के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस मौके पर दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज क्रिकेटर ग्रीम स्मिथ, मखाया एनटिनी, हाशिम अमला, तेम्बा बावुमा और कगिसो रबाडा

के अलावा जिम्बाब्वे के हैमिल्टन मासकाद्जा और नामीबिया के रुडोल्फ जानसेन वान वुरेन भी मौजूद थे।

किस देश के कितने वेन्यू

दक्षिण अफ्रीका के आठ शहर, जिम्बाब्वे के तीन और नामीबिया का एक शहर अगले साल होने वाले इस वैश्विक टूर्नामेंट के मुकाबलों की मेजबानी करेंगे। इन तीनों देशों के किन स्टेडियम में वनडे विश्व कप 2027 के मैच होंगे...

दक्षिण अफ्रीका के इन स्टेडियम में होंगे मैच

- वांडरर्स स्टेडियम (जोहानिसबर्ग),
- सुपरस्पोर्ट पार्क, सेंचुरियन (श्वाने),
- न्यूलैंड्स क्रिकेट ग्राउंड (केपटाउन),
- किंग्समीड क्रिकेट ग्राउंड (डरबन),
- सेंट जॉर्ज पार्क (गकेबेर्हा),
- मंगाउंग ओवल (ब्लोमफोंटेन),
- बोलैंड पार्क (पार्ल)
- बफेलो पार्क (कुगोम्पो सिटी)

जिम्बाब्वे के तीन शहर करेंगे मेजबानी

- हरारे स्पोर्ट्स क्लब (हरारे)
- क्वींस स्पोर्ट्स क्लब (बुलावायो)
- फाले मोसी-ओआ-टुन्या अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम (विक्टोरिया फॉल्स)

नामीबिया: नामीबिया क्रिकेट ग्राउंड (विंडहोक)

आईसीसी अध्यक्ष जय शाह ने कहा, 24 साल बाद इस प्रतिष्ठित टूनार्मेंट की दक्षिण अफ्रीका में वापसी क्रिकेट के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। हमें पूरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया एक यादगार आयोजन करेंगे, जो उस गर्मजोशी, जुनून और समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करेगा जो इस क्षेत्र को वास्तव में अनूठा बनाती है।

नए प्रारूप में होगा टूर्नामेंट

आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2027 में 57 मुकाबले खेले जाएंगे। टूर्नामेंट में अधिक प्रतिस्पर्धा और रोमांच लाने के लिए तीन चरणों वाला नया प्रारूप अपनाया गया है। सबसे पहले सुपर सीरीज खेली जाएगी जिसमें रैंकिंग में 12वें से 14वें स्थान पर रहने वाली तीन टीम राउंड-रॉबिन प्रारूप में आमने-सामने होंगी। इसमें विजेता टीम अगले चरण में पहुंचेगी। इसके बाद 12 टीम के बीच 30 मैच का चरण होगा। देशों की टीम को छह-छह टीम के दो ग्रुप में बांटा जाएगा और दोनों ग्रुप में राउंड-रॉबिन आधार पर मुकाबले होंगे। प्रत्येक ग्रुप की शीर्ष तीन टीमें, साथ ही दोनों ग्रुप में चौथे स्थान पर रहने वाली टीम में से बेहतर प्रदर्शन करने वाली एक टीम सुपर-7 चरण में पहुंचेगी। सुपर-7 चरण में कुल 21 राउंड-रॉबिन मैच खेले जाएंगे। इसके बाद शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। सेमीफाइनल में सुपर-7 में शीर्ष पर रहने वाली टीम का मुकाबला चौथे स्थान की टीम से होगा जबकि दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वाली टीमें दूसरे सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगी।

टीम इंडिया के लिए खुशखबरी! जसप्रीत बुमराह पूरी तरह फिट

श्रीलंका के खिलाफ दोनों टेस्ट खेलने की मिली मंजूरी

एजेंसी, नई दिल्ली ।

भारतीय क्रिकेट टीम को श्रीलंका दौरे से पहले बड़ी राहत मिली है। तेज गेंदबाजी आक्रमण के अगुआ जसप्रीत बुमराह ने बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में अनिवार्य फिटनेस टेस्ट पास कर लिया है। इसके साथ ही वह अगले महीने श्रीलंका के खिलाफ होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज में खेलने के लिए पूरी तरह फिट घोषित कर दिए गए हैं। बुमराह को हाल ही में इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के दौरान प्रभाव (इम्पैक्ट) चोट लगी थी। इसी वजह से उन्हें लॉर्ड्स में खेले गए तीसरे वनडे से बाहर बैठना पड़ा था। हालांकि अब मेडिकल टीम ने उन्हें खेलने की मंजूरी दे दी है।

15 अगस्त से शुरू होगी टेस्ट सीरीज

भारत और श्रीलंका के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला 15 अगस्त से गॉल में खेला जाएगा। दूसरा और अंतिम टेस्ट 23 अगस्त से कोलंबो में होगा।

डब्ल्यूटीसी फाइनल की दौड़ में अहम होगी यह सीरीज

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र में भारत के लिए यह सीरीज बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है। फाइनल की दौड़ में बने रहने के लिए टीम इंडिया को अपने बचे हुए नौ टेस्ट मैचों में से कम से कम सात जीतने होंगे। ऐसे में श्रीलंका के खिलाफ 2-0 से सीरीज जीतने का लक्ष्य भारतीय टीम के लिए काफी अहम होगा। इसके बाद भारत को न्यूजीलैंड के कठिन विदेशी दौरे पर भी जाना है।

चोटों से जूझ रही है टीम इंडिया

- हालांकि बुमराह की वापसी राहत लेकर आई है, लेकिन भारतीय टीम अभी भी कई चोटों से परेशान है।
- हर्षित राणा हैमस्ट्रिंग चोट के कारण बाहर हैं।
- नीतीश रेड्डी क्वाड्रिसेप्स चोट से उबर रहे हैं।
- वॉशिंगटन सुंदर हैमस्ट्रिंग चोट के चलते पहला टेस्ट नहीं खेल पाएंगे।
- आकाश दीप पीठ में स्ट्रेस रिएक्शन के कारण लंबे समय से टीम से बाहर हैं।

बीसीसीआई अधिकारी ने क्या कहा?

बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से कहा, 'जसप्रीत बुमराह अपनी इम्पैक्ट इंजरी से पूरी तरह उबर चुके हैं। उन्होंने सेंटर ऑफ एक्सीलेंस द्वारा निर्धारित सभी फिटनेस टेस्ट पास कर लिए हैं। उम्मीद है कि वह दोनों टेस्ट मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे, क्योंकि वह टीम की योजनाओं का अहम हिस्सा हैं।'

मनोरंजन

'प्रीति मेरे करियर का सबसे यादगार किरदार..'

कुछ किरदार सिर्फ पर्दे पर नहीं रहते, कलाकार के भीतर भी बस जाते हैं। अभिनेत्री महिमा मकवाना के लिए 'मुसाफिर कैफे' की 'प्रीति' ऐसा ही किरदार रही। महिमा कहती हैं कि इस रोल ने उन्हें खुद को स्वीकार करना और खुद से प्यार करना सिखाया। एक दैनिक अखबार से बातचीत में उन्होंने अपने करियर, इंटीमेट सीन्स, टीवी से फिल्मों तक के सफर और मसूरी में अपने डॉग के नाम पर 'परिंदा कैफे' खोलने के सपने पर खुलकर बात की।

'स्क्रिप्ट पढ़ते ही प्रीति के किरदार से हो गया था प्यार' महिमा कहती हैं कि 'मुसाफिर कैफे' की स्क्रिप्ट पढ़ते ही उन्हें लगा कि वह प्रीति का किरदार निभाना चाहती हैं। 'जब मैंने पहली बार स्क्रिप्ट पढ़ी, तभी मुझे लगा कि मुझे प्रीति ही बनना है। वह बहुत एस्पिरेशनल है। सोलो ट्रैवल करती है, अपने आसपास के लोगों को अपनापन महसूस कराती है, बहुत अच्छी लिस्नर है और बेहद इमोशनली इंटेलिजेंट है। अगर मुझे कभी असल जिंदगी में प्रीति मिले, तो मैं उससे दोस्ती जरूर करना चाहूंगी। वह ऐसी इंसान है, जो आपको रास्ता भी दिखाएगी और यह भी महसूस कराएगी कि आप अकेले नहीं हैं।'

'इस किरदार ने मुझे खुद को स्वीकार करना और खुद से प्यार करना सिखाया'

महिमा के लिए 'प्रीति' सिर्फ एक रोल नहीं रही। वह मानती हैं कि इस किरदार ने उनकी निजी जिंदगी पर भी असर डाला ..'मुझे पहले खुद को स्वीकार करना बहुत मुश्किल लगता था। आसपास का शोर और लोगों की बातें कहीं न कहीं असर करती थीं। लेकिन प्रीति ने मुझे खुद को एक्सेप्ट करना सिखाया। उसने मुझे खुद से प्यार करना सिखाया। मुझे एहसास हुआ कि जब तक आप खुद को आजादी नहीं देंगे... तब तक आप अपने आसपास के लोगों को भी आजादी महसूस नहीं करा पाएंगे। मेरे लिए इससे बड़ा गिफ्ट कोई नहीं हो सकता। मैं यह सिर्फ फिल्म प्रमोट करने के लिए नहीं कह रही हूं। मुझे सच में लगता है कि प्रीति मेरे करियर का सबसे यादगार किरदार रहेगी।'

'25 की उम्र तक लगा था, जिंदगी के सारे जवाब मिल जाएंगे'

जिंदगी और करियर के इस सफर ने महिमा का नजरिया भी बदला है। वह कहती हैं कि उम्र के साथ हर सवाल का जवाब नहीं मिलता, लेकिन सोच जरूर बदल जाती है 'मुझे लगता था कि 25-26 साल की उम्र तक सब कुछ समझ आ जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं होता। जिम्मेदारियां बढ़ती रहती हैं। जिंदगी में शोर हमेशा रहेगा। फर्क सिर्फ इतना है कि अब मैंने उसके बीच खुद को संभालना सीख लिया है। डर और इंसिक्योरिटी कई बार हमारे दिमाग में ऐसी कहानियां बना देते हैं, जो असल में होती ही नहीं हैं। इसलिए उन विचारों को ज्यादा ताकत नहीं देनी चाहिए। यह सुनने में थोड़ा फिलॉसॉफिकल लगता है, लेकिन यही मेरी रोज की प्रैक्टिस है।'

'मेडिटेशन ने मुझे जिंदगी के शोर से बाहर निकलना सिखाया'। महिमा बताती हैं कि इस सीरीज की शूटिंग के दौरान उन्होंने मेडिटेशन शुरू किया और धीरे-धीरे इसका असर अपनी जिंदगी में महसूस किया 'मैं यह नहीं कहूंगी कि मेडिटेशन ने मेरे जीवन का शोर पूरी तरह खत्म कर दिया, लेकिन उसने उसे काफी कम जरूर कर दिया। अब मैं खुद के पास जल्दी लौट पाती हूं।'

'रागिनी 3' में नजर आएंगी महवश; फिल्म का एलान कर जताई खुशी

महवश इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'रागिनी 3' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म का उन्होंने आज शुक्रवार को आधिकारिक एलान कर दिया है। महवश ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए खुशी जाहिर की है। साथ ही एकता कपूर का आभार जताया है।

महवश ने सेट से शेयर कीं तस्वीरें

महवश ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट साझा किया है। उन्होंने फिल्म 'रागिनी 3' का एलान करते हुए कुछ फोटोज शेयर की हैं, जो सेट की हैं। फिल्म को लेकर तैयारी चल रही हैं। एक तस्वीर में महवश ने हाथों में क्लैपरबोर्ड थाम रखा है, जिस पर लिखा है, 'रागिनी 3'।

बोलीं- 'अपने प्यार से संभाल लेना दोस्तों'

महवश ने लिखा है, 'अपनी अगली फिल्म 'रागिनी 3' का एलान करते हुए मैं बहुत उत्साहित हूं। जल्द ही सिनेमाघरों में रिलीज होगी। मुझे यह मौका देने के लिए एकता कपूर मैम, बालाजी मोशन पिक्चर्स, श्रुति महाजन और हमारे निर्देशक शशांक घोष सर की हमेशा आभारी रहूंगी। बाकी तुम लोग अपने प्यार से संभाल लेना दोस्तों'।

कौन-कौन है फिल्म में?

बता दें कि इस फिल्म में महवश के अलावा आयुष शर्मा, जुनैद खान, तमन्ना भाटिया, नरगिस फाखरी और आरजे महवश जैसे कलाकार नजर आएंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक नरगिस फाखरी इस हॉरर ड्रामा में एक पुलिस ऑफिसर का किरदार निभाएंगी। इस फिल्म के जरिए दर्शकों को सस्पेंस, ह्यूमर और सुपरनैचुरल एलिमेंट्स का अनोखा संगम देखने को मिलेगा। एकता कपूर की इस फिल्म में महवश की एंट्री पर उनके फैंस बधाई दे रहे हैं।

फातिमा ने खुद को क्यों बताया मुसीबत खड़ी करने वाली लड़की?

फातिमा सना शेख अपनी अपकमिंग वेब सीरीज 'तीन कौवे' को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में उन्होंने इंस्टाग्राम पर इस सीरीज में काम कर रहे कलाकारों के साथ तस्वीरें शेयर की हैं। इसके साथ उन्होंने एक शानदार कैप्शन लिखा है। उन्होंने सभी साथियों को गैंगस्टर बुलाया है।

फातिमा की पोस्ट में क्या है?

फातिमा सना शेख ने जो तस्वीरें शेयर की हैं, उसमें सिद्धांत गुप्ता और बॉबी देओल नजर आ रहे हैं। एक तस्वीर में फातिमा सबके साथ सेल्फी ले रही हैं। एक और तस्वीर में वह बॉबी देओल के साथ विक्ट्री साइन बनाते हुए पोज दे रही हैं। एक और तस्वीर में फातिमा सिद्धांत से बेबाकी से नजरें मिला रही हैं।

मजेदार है कैप्शन

तस्वीरें शेयर करते हुए फातिमा सना शेख ने लिखा 'गैंगस्टर। तीन कौवे गैंग। हम मजे में हैं। मैं सिर्फ एक लड़की हूं। सबसे अच्छी लड़की। मुसीबत खड़ी करने वाली। बॉबी देओल महान हैं। बात खत्म।'

सीरीज की स्टारकास्ट

आपको बता दें कि 'तीन कौवे' अमेजन प्राइम वीडियो पर आने वाली अपकमिंग सीरीज है। इसमें सिद्धांत गुप्ता, बॉबी देओल और फातिमा सना शेख मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसमें पावेल गुलाटी, रोनित रॉय, ईशा तलवार, चांदनी बैंज और फैसल मलिक भी हैं। इसका निर्देशन प्रियंका घोष कर रही हैं।

क्या है सीरीज की कहानी?

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 'तीन कौवों' की कहानी एक ऐसे पूर्व सीक्रेट एजेंट के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे सात साल से मृत मान लिया गया था। मगर गद्दार करार दिए जाने के बाद वह अपना नाम साफ करने के लिए वापस लौटता है। यह सीरीज इस साल के आखिर में रिलीज हो सकती है।

'मुझको राणाजी माफ करना' के नए वर्जन में दिखीं माहिरा शर्मा

90 के दशक के कई गाने आज भी लोगों की जुबान पर हैं। इनमें से एक है फिल्म 'करण अर्जुन' का मशहूर गीत 'मुझको राणाजी माफ करना', जिसने जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की थी। अब इस सदाबहार गाने को नए अंदाज में 'राणाजी 2.0' के नाम से पेश किया गया है। नए वर्जन में अभिनेत्री माहिरा शर्मा नजर आ रही हैं। इस पर माहिरा का कहना है कि इतने लोकप्रिय गाने को रीक्रिएट करना उनके लिए आसान नहीं था, क्योंकि दर्शकों की उम्मीदें पहले से ही बहुत बड़ी थीं। माहिरा शर्मा ने कहा, ''जब आप किसी आइकॉनिक गाने से जुड़ते हैं तो थोड़ा दबाव जरूर होता है, क्योंकि उन गानों से लोगों की पुरानी यादें जुड़ी होती हैं। मेरी कोशिश रही कि मैं अपनी अलग एनर्जी लेकर आऊं, लेकिन गाने की असली पहचान और एहसास को भी बरकरार रखूं।''

उन्होंने कहा, '''राणाजी 2.0' की म्यूजिक, कोरियोग्राफी और वीडियो का पूरा लुक मिलकर एक नया अनुभव देता है। मुझे उम्मीद है कि जिस तरह पूरी टीम ने इस गाने को बनाते समय आनंद लिया, उसी तरह दर्शक भी इसे देखकर खूब पसंद करेंगे।''

इस गाने की कोरियोग्राफी मशहूर डांस डायरेक्टर रेमो डिसूजा ने की है। उन्होंने कहा, ''समय के साथ डांस का अंदाज काफी बदल गया है और यही बात 'राणाजी 2.0' को खास बनाती है। हमारी कोशिश थी कि गाने के विजुअल्स नए और मनोरंजक हों, लेकिन उसकी पुरानी पहचान भी बनी रहे। हम चाहते थे कि जिन्होंने सालों से इस गाने को पसंद किया है और जो पहली बार इसे सुन रहे हैं, दोनों ही इसे देखने का आनंद लें।''

वहीं, संगीतकार तनिष्क बागची ने कहा, ''किसी क्लासिक गाने को नए रूप में तैयार करना आसान नहीं होता। जब किसी पुराने लोकप्रिय गाने पर काम करते हैं तो सबसे बड़ी जिम्मेदारी उसकी एहसास को सुरक्षित रखना होता है। इस गाने की धुन और आवाज की अपनी अलग विरासत है। मेरा पूरा ध्यान इसे नया साउंड देने पर था, लेकिन इस तरह कि लोगों को वही पुरानी यादें भी महसूस हों। मैं चाहता था कि यह आज के दौर के हिसाब से भी ताजा लगे और साथ ही लोगों को याद दिलाए कि यह गाना आखिर इतना क्लासिक क्यों बना।'' 'राणाजी 2.0' को टिप्स म्यूजिक ने रिलीज किया है। इस नए वर्जन में इला अरुण और अलका याज्ञनिक की आवाज को बरकरार रखा गया है। यह गाना आधुनिक संगीत और पुराने जादू का मेल बनकर सामने आया है। 'मुझको राणाजी माफ करना' साल 1995 में आई सुपरहिट फिल्म 'करण अर्जुन' का हिस्सा था। इस फिल्म में शाहरुख खान, सलमान खान, राखी, काजोल और ममता कुलकर्णी जैसे कलाकार नजर आए थे। फिल्म की तरह इसके गाने भी जबरदस्त हिट हुए थे। खास तौर पर ममता कुलकर्णी पर फिल्माया गया यह गीत आज भी 90 के दशक के सबसे यादगार गानों में गिना जाता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-आशीष श्रीवास्तव द्वारा द इंडियन एक्सप्रेस प्राइवेट लिमिटेड, प्लाट नंबर सी-5 इंसीट्यूशनेल एरिया, सेक्टर-6, पंचकूला-134109 हरियाणा से मुद्रित करवाकर, 90/1 खुदा अलीशेर चंडीगढ़ से प्रकाशित। संपादक-प्रभात कुमार।
समाचार चयन के लिए पी.आर.बी एक्ट के तहत जिम्मेदार। सभी विवादों का निपटारा केवल चंडीगढ़ (हरियाणा) के न्यायिक क्षेत्र में ही होगा। RNI No-CHAHIN/2022/82911 (मोबाइल नं.-7986125820 E-mail:badaltealfaaz@gmail.com)